कान्त भजन माला

(तीसरा भाग)

भेंटकर्ता

रघबीर सिंह

डायरेक्टर

धर्मपाल प्रेमचन्द लिमिटेड

४८७३, चांदनी चौक, दिल्ली-११०००६

दिनांक ११-११-१९७७ मूल्य—सप्रेम पाठ

पूज्य ला० प्रेमचन्द जी सुगन्धी

भूतपूर्व मैनेजिंग डायरेक्टर,

धर्मपाल प्रेमचन्द लिमिटेड, दिल्ली

की

पुण्य स्मृति

में सप्रेम भेंट
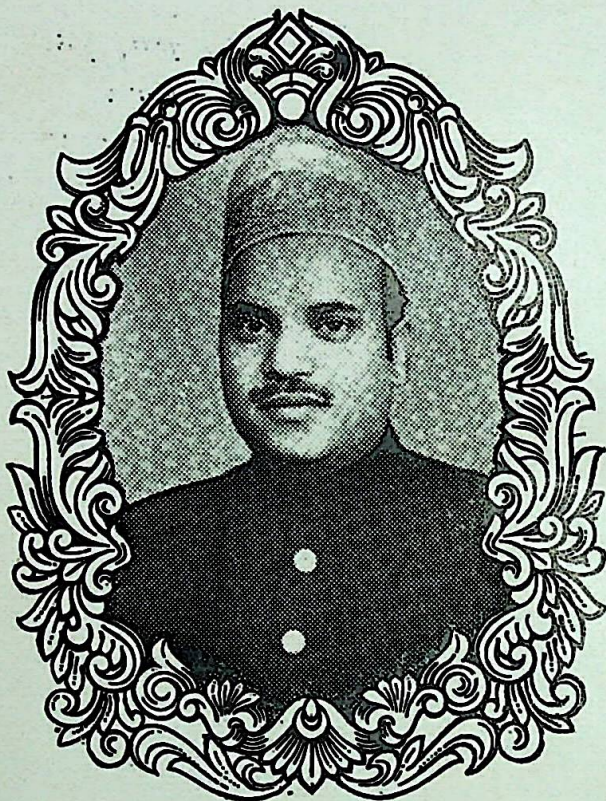
IN MEMORY OF

LALA PREM CHAND JI

DHARAMPAL PREMCHAND LTD., DELHI

(*Mfrs.* "BABA" BRAND ZAFRANI PATTI)

Date of Birth : 30th Aug. 1922 **Date of Vaikunthvas : 11th Nov. 1976**

IN MEMORY OF L. PREM CHAND JI

The memory lives on and as days pass by, we trace back with increasing fondness, the qualities of a man who lived by his noble ideals. The man was L. PREM CHAND JI, whose first death anniversary we observe today with mixed feelings of sorrow and adoration.

L. Prem Chand Ji joined hands with his father, L. Dharampal Ji, in his Perfumery & Tobacco business in 1938. He had worked hard in his life-time to raise his business to the highest level in India. He was a very selfless and conscientious worker.

He was a symbol of humanism and benevolence. He was the brain and moving spirit behind the entire business, who raised the status of DHARAMPAL PREMCHAND LTD., to the peak not only in India but throughout the world.

L. Prem Chand Ji meant many things to many people and was honoured by all. His life is an unparallel example of devotion to the causes of his organisation and his people; and his achievements graced by nobility of purpose, have brought benefits of lasting value. He will always remain a source of encouragement and inspiration for all of us. As per

his last desire, a charitable trust under the name of "Dharampal Premchand Memorial Ttust" has been created for the social uplift of the poor humanity.

....

Today we follow his footprints and attribute all our progress to his unerring foresight, inspired by his principles. The house of DHARAMPAL PREMCHAND has grown into one of the most popular organisations of its kind in the country.

May God give eternal peace to his immortal soul and pray that he may continue to guide us till eternity in the fulfilment of his life-mission !

RAGHBIR SINGH
DIRECTOR
Dharampal Premchand Limited,
4873, Chandni Chowk,
DELHI-110006

November 11, 1977.

संग्रहकर्ता

पं० श्रीकान्त मिश्र "कान्त" गुरुजी

के० ४४/५, भैरवनाथ, वाराणसी

॥ दो शब्द ॥

प्रिय भक्तजन !

आप भक्तजनों की सेवा में इस भजन-संग्रह को अर्पित करते हुए अपार आनन्द हो रहा है। इससे अधिक आनन्द उस समय प्राप्त होगा जब आप भक्तजन अपनी मधुर वाणी से इस मानव जीवन के अशान्त सागर को शान्ति स्वरूप "भगवत-भजन" के स्रोत द्वारा स्वच्छ कर सकेंगे। ईश्वर की भक्ति की इच्छा करना ही मानवता का प्रारम्भ है, भजन करने लगना ही "मानवता का विकास" है और भगवत-प्राप्ति में ही "मानवता की पूर्णता" है। आप अपने व्यस्त जीवन में से दो क्षण भी यदि इस संग्रह के अवलोकनार्थ एवं श्री भगवान की लीलाओं की स्मृति हेतु निकाल सकेंगे जो निःसन्देह मुझे मेरी सेवा का पुरस्कार अवश्य प्राप्त हो जायेगा। माँ की अपार कृपा है कि "कान्त भजन माला" की बढ़ती हुई माँग को देखकर दिल्ली निवासी श्री रघबीरसिंह जी व श्रीमती प्रकाशवती जी जिन्होंने पहिले भजन माला की सेवा की थी प्रेरणा हुई कि वह तीसरा संस्करण भी छपवाकर भक्तजनों की सेवा में अर्पण करें। आशा करता हूँ कि पहिले की भाँति आप अपने व्यस्त जीवन में से दो क्षण भी इस संग्रह के अवलोकनार्थ निकाल सकेंगे तो निःसन्देह मुझे मेरी सेवा का पुरस्कार प्राप्त होगा।

के-४४/५, भैरोनाथ,
वाराणसी
११-११-१९७७

निवेदक :
श्रीकान्त मिश्र
"कान्त"

॥ प्रार्थना एवं संकीर्तन भजन ॥

॥ दोहा ॥

गणपति की कर वन्दना, सद्गुरु का कर ध्यान।
भजनों का संग्रह किया, सबका हो कल्याण॥

॥ श्लोक ॥

गजाननम् भूत गणादि सेवितम्,
कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम्।
उमा सुतम् शोक विनाश कारकम्,
नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्॥

॥ गणपति वन्दना ॥

गाइये गणपति जग बन्दन।
संकर-सुवन भवानी-नन्दन॥ गाइये० ॥
सिद्धि-सदन, गज-बदन, विनायक।
कृपा सिन्धु, सुन्दर, सब लायक॥ गाइये० ॥
मोदक-प्रिय मुद-मंगल दाता।
विद्या-बारिधि बुद्धी-बिधाता॥ गाइये० ॥
मांगत तुलसीदास कर जोरे।
बसहु राम-सिय मानस मोरे॥ गाइये० ॥

॥ दोहा ॥

जिन भक्तन जिन कविन के, वचन लिये गहि सार।
तिन तिन को वन्दन करूँ, उर मानू उपकार॥

॥ २ ॥

प्रथम गुरु को वन्दना, दुतिये आदि गणेश।
त्रितिये सुमरूँ शारदा, मेरे कारज करो हमेश॥

॥ गुरु वन्दना ॥

कर सेवा गुरु चरणन की, युक्ति यही भव तरणन की
गुरु की महिमा है भारी, वेग करै भव जल पारी
विपदा हरे यह तन मन की॥ युक्ति यही......
मन की दुविधा दूर करे, ज्ञान भक्ति भर पूर भरे
भेद कहे शुभ कर मन की॥ युक्ति यही......
गुरु दयालू होते हैं, मन के मैल को धोते हैं
मोह हटावे विषयन की॥ युक्ति यही......
भेद भरम सब मिटा दिया, घट में दर्शन करा दिया
कैसी लीला दर्शन की॥ युक्ति यही......
"भक्त मंडल" नित गुण गावे, गुरु चरणों में झुक जावे
करौ वन्दना चरणन की॥ युक्ति यही......

॥ दोहा ॥

तीरथ न्हाये एक फल, संत मिले फल चार।
सद्गुरु मिले अनेक फल, कहे कबीर विचार॥

॥ भजन १ ॥

क्या अनोखी शान है गुंरुदेव के दरबार में।
खुले हाथों ही दया का दान है इस द्वार में॥

तर रहे कितने पतित शठ ज्ञान-शून्य सुधर रहे।
भर रहे शुचि शान्ति से गुरु ज्ञान के आधार में॥

जिसने देखा है वही बस जानता इस बात को।
कह नहीं सकते कि क्या जादू है इनके प्यार में॥

कीर्त्ति, मति, गति, बुद्धि वैभव जिसको जो कुछ है मिला।
गुरु कृपा से ही सुलभ सब कुछ हुआ संसार में॥

प्रेम मय भगवान् प्रियतम, हृदय के अतिशय सरल।
रीझ जाते हैं 'पथिक' के तनिक से उद्गार में॥

॥ दोहा ॥

गुरु गोविन्द दोनों खड़े, काके लागों पांय।
बलिहारी गुरु चरन की, जिन गोविन्द दिये दिखाय॥

।। श्लोक ।।

।। श्री ।।

हरिः ॐ तत्सत् ।

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ।।

अखण्डं मण्डला कारं, व्याप्तं येन चरा चरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ।।
अज्ञान तिमिरांधस्य, ज्ञानांजन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

।। भजन २ ।।

हे मेरे गुरुदेव करुणा सिन्धु करुणा कीजिये ।
हूँ अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिये ।।
खा रहा गोते हूँ मैं भव सिन्धु के मझधार में ।
आसरा है दूसरा कोई न अब संसार में ।।
मुझमें है जप तप न साधन औ नहि कुछ ज्ञान है ।
निर्लज्जता है एक बाकी और बस अभिमान है ।।
पाप बोझे से लदी नैया भँवर में आ रही ।
नाथ दौड़ो अब बचाओ जल्द डूबी जा रही ।।
आप भी यदि छोड़ देंगे, फिर कहाँ जाऊँगा मैं ।
जन्म दुःख से नाव कैसे पार कर पाऊँगा मैं ।।
सब जगह मंजुल भटक कर अब शरण ली आप की ।
पार करना या न करना दोनों मर्जी आप की ।।

सरकार का स्वयं वचन है—

मोते अधिक गुरुहिं जिय जानी,
सकल भाव सेवहि मन मानी।

गुरु शब्द का अर्थ है :—

गुः शब्दोऽन्धकारः स्यात् रु शब्दो
तन्निषेधकृत् अन्धकार निरोधत्वाद् गुरु रित्यमि धीयते।
गु का अर्थ अन्धकार रु का अर्थ निवर्तक।
अन्धकार रूपी अज्ञान का नाश करना गुरुत्व है।

अतःगुरु सेवा, प्रणाम, ध्यान, पूजा, कृपा कटाक्षभाजन, विशुद्ध निर्मल मन हो कर भगवत् कथा में प्रवेश हो यही गुरुतत्त्व के अभिप्राय का लक्ष्य है। "सदगुरु मिले जाहि जिमि, संसय भ्रम समुदाय।"

॥ सवैया ॥

बीती निशा तम पुञ्ज मिटे, अरुणोदय की सुषमामयी लाली,
छायो प्रकाश विकाश भयो, दुःख द्वन्द मिटे लखि तेज कराली।
आविर्भाव भयो जग में, "श्रीकान्त" कह्यो छवि देखि निराली,
मातु हरो विपदा जनकी, जै जै दुर्गे जै जै महाकाली॥

॥ भजन ३ ॥

जयति जय २ हे भवानी जयति हे जगदम्बिके।
सर्व मंगल माँगल्ये शिवे सर्वार्थं साधिके ॥ जयति० ॥

तेरी शाश्वत ज्योति जल, करती प्रकाशित विश्व को।
है वही ज्योति समाई चन्द्र रवि के अंग में ॥ जयति० ॥

सर्व देवों से हो पूजित सिंह वाहिनी मां तुम्ही।
आज भक्तों की ये पूजा करलो स्वीकृत चण्डिके ॥ जयति० ॥

॥ रुबाई ॥

फ़लक दाती के सेवक रहमतों का ज़ाम लेते हैं।
वो भव सागर से तरते हैं जो दामन थाम लेते हैं ॥

जहाँ में एक दो क्या सैंकड़ों इन्सान हैं लेकिन।
मुकद्दर जिनका अच्छा है वो माँ का नाम लेते हैं ॥

॥ भजन ४ ॥

माँ हमारा ध्यान रखना हम तेरी सन्तान हैं।
माँ हमारे साथ रहना हम अभी नादान हैं॥

तूँ है पापों की उद्धारक मैं हूँ पापों से भरा।
कर्म जो जो करते निशदिन वह सभी विद्यमान हैं॥

जो न तारोगी तो माँ जग में हँसाई आपकी।
हम तुम्हारे तुम हमारी यह हमें अभिमान है॥

देख कर अवगुण हमारे रूठ जाना ना कहीं।
पतित पावन आप हो बस ये हमें अभिमान है॥

ओट कर हम कर्म करते हैं बड़ी चतुराई से।
कहने को हम चतुर कहलाये मगर नादान हैं॥

पुत्र तो कपूत होते पर ना मात कुमात हो।
"वीर" जो सेवा से चूके वो भी क्या इन्सान है॥

॥ रुबाई ॥

भुलाकर दिल से ऐ माता मैं तेरे आस्ताने को।
कहाँ जाऊँ किधर जाऊँ मुकद्दर आजमाने को॥

"फलक" की इल्तजा ये है कि रख ले आबरू दाती।
तेरे चरणों में आया हूँ मैं ठुकरा कर जमाने को॥

॥ भजन ५ ॥

मेरी मइया यही तुमसे सदा विनती हमारी है।
हमारी याद किस अपराध से तुमने विसारी है॥

तुम्हारा ही सहारा है तुम्ही ने हाथ पकड़ा है।
अकेला छोड़ दोगी तो हँसी इसमें तुम्हारी है॥

फँसे हैं हम जो माया में छुड़ाती क्यों नहीं हमको।
तुम्ही कहदो खता किसकी हमारी या तुम्हारी है॥

बड़ा होता है दुःख तुमको दयामयी शक नहीं इसमें।
तुम्हारा भक्त जब संसार में कोई दुःखारी है॥

खड़ा दरबार में है "कान्त" झोली आज ले करके।
इसे दो भीख करुणा का तुम्हारा ही भिखारी है॥

॥ रुबाई ॥

दूर पापों का फन्द होता है, दर ना रहमत का बन्द होता है।
ऐ 'फलक' माँ के द्वार पे इन्साँ, सर झुका कर बुलन्द होता है॥

॥ भजन ६ ॥

विनती सुनो माँ अम्बे हमारी ।
काहे को मेरी सुधि है विसारी ॥
दुःख दारिद्र मिटाओ मेरा, तेरा ही बस एक सहारा,
भक्ति भरो हूँ तेरा भिखारी ॥ विनती……
तुम्हरी दया को, को नहि जानत, सब जनको मैया तुम मानत
जो सुमिरे सो होय सुखारी ॥ विनती……
यह संसार मोह माया है, काम क्रोध मद लोभ यहाँ है
कौनो जतन मोही लेहु उबारी ॥ विनती……
जग जननी तोसों का माँगू नाम जपूं तुमको नहीं जानूं
मन चाहत है दरश तुम्हारी ॥ विनती……

जै माँ काली

तूँ ही है भवानी वरदानी सब देवन की ।
शंकर की रानी गुण खानी जग पालिका ॥

तूँ ही मात दुर्गा दले दुर्गासुर दानव को ।
भैशासुर मारिवे को प्रगटी ह्वै कालिका ॥

जोगिन जमात लै जाने रण रंग ढंग ।
वाँके हैं विशाल नैन चंचल सुचालिका ॥

भनै हरीशंकर योतिच्छन अनूप तेज ।
सुन्दर सरूप गले मुंडन की मालिका ॥

॥ भजन ७ ॥

हमारी काली मइया को मना ले जिसका दिल चाहे।
सुफल नर देह को अपनी बनाले जिसका दिल चाहे ॥

वही है लक्ष्मी सावित्री वही गिरिजा भवानी है।
वही गंगा वही जमुना नहालो जिसका दिल चाहे ॥

वही है राम की सीता वही है कृष्ण की राधे।
वही शिवनाथ की गौरी मना लो जिसका दिल चाहे ॥

वही है गीता गायत्री वही है कालिका चण्डी।
वही हर देव में शक्ती मनालो जिसका दिल चाहे ॥

वही है चाँद तारों में वही ज्योति है सूरज में।
इन्हीं के चरणों में मनको लगालो जिसका दिल चाहे ॥

॥ रुबाई ॥

अगर फरियाद दिल से हो किनारा मिल ही जाता है।
भरोसा हो जो माँ का तो किनारा मिल ही जाता है ॥

॥ भजन ८ ॥

मेरी मैया मुझे अपना बना लोगी तो क्या होगा।
बुला लोगी शरण अपने बतादो क्या बुरा होगा॥

यदि मैं योग्य हूँ नहिं तो चरण में अम्ब रखलो तो।
चरण में सीख लूंगा सब गुज़ारां यों मेरा होगा॥

भटकता हूँ मैं दुनियाँ में नहिं सुख शान्ति जीवन में।
चरण सुख शान्ति जो तुम्हरी मैं पा जाऊँ तो क्या होगा॥

दयालु हो जगत् जननी सदा उपकार करती हो।
दया उपकार कर पावन करो तो क्या गजब होगा॥

मेरी बन जायगी मैया न बिगड़ेगी तुम्हारी कुछ।
तुम्हारे नाम के पीछे जो 'सेवक' हो तो क्या होगा॥
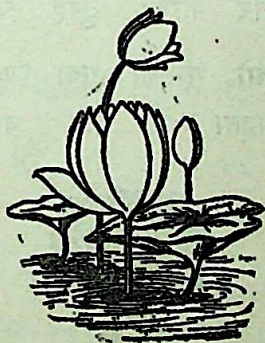
॥ भजन ६ ॥

अगर चाहता हूँ तो यह चाहता हूँ।
तुम्हारा ही होकर रहा चाहता हूँ॥

सुनो मेरी माता मैं जो चाहता हूँ।
तेरी सेवा में बस रहा चाहता हूँ॥

बिना आपके माँ रिहाई क़फस है।
रिहाई के बदले फँसा चाहता हूँ॥

बनो तुम मेरी या तो अपना बना लो।
ये दो बातों में से बस एक चाहता हूँ॥

बहुत दूर हूँ तुमसे ये मेरी दाती।
चरण पास आने को जी चाहता है॥

बहुत दिन से बिछुड़ा हूँ मैं तुमसे माता।
बहुत प्यार करना तुम्हें चाहता हूँ॥

न ठुकराओ मुझको सदा ध्यान रखना।
यही चाहता हूँ यही चाहता हूँ॥

॥ भजन १० ॥

तेरे मन्दिर में आशा के चढ़ाने फूल आया हूँ ।
करो स्वीकार यह माता बड़ा अनमोल लाया हूँ ॥

तूँ ही माता पिता बन्धु विधाता है गरीबों की ।
तेरे चरणों में कुछ अपनी यहाँ फरयाद लाया हूँ ॥

तुम्हारे जो पुजारी हैं भला वो क्यों भिखारी हैं ।
दया कर ऐ मेरी जननी बहुत कुछ मैं सताया हूँ ॥

करूँ मैं किस तरह सेवा सभी में आपकी माया ।
हृदय एक पास है मेरे चढ़ाने इसको आया हूँ ॥

मेहर गर आपकी हो जाय बेड़ा पार सेवक का ।
करो अब पार इस भव से बहुत जग में भुलाया हूँ ॥

॥ भजन ११ ॥

मैं तो आया तेरे द्वार जै जै माँ जै जै माँ ।
सब मिल करते यही पुकार जै जै माँ जै जै माँ ॥

हुई हो भूल जो मुझसे मेरी जननी क्षमा करना,
भरे अवगुण जो सब मुझमें तूँ इस पर ध्यान न देना ।
मैं तो गाता तेरा नाम जै जै माँ जै जै माँ ॥

तुम्हारे दर पे जो आया सभी कुछ पा लिया उसनें,
दिखा दो दर्श तूँ अपना पुकारा दिल से है हमने।
करदे दुःखियों का उद्धार जै जै माँ जै जै माँ॥

तुम्हारे ही भरोसे है मेरे जीवन की ये नैय्या,
तुम्ही को पार करना है तूँ ही है मेरी खेवैइया।
कर दे मेरा बेड़ा पार जै जै माँ जै जै माँ॥

॥ भजन १२ ॥

मेरी नांव तुम्हारे हाथ में है जगदम्बे पार लगा देना।
पापी मन के अंधियारे में एक प्यार का दीप जला देना॥

जीवन तो दिया कुछ करने को पर भूल गया सब झंझट में।
मैं एक अभागा राही हूँ हे माँ मुझे राह दिखा देना॥

तुम भक्तन की हितकारी हो, करती सबका कल्याणी हो।
तुम दीन की हालत देख जरा मेरे बिगड़े काज बना देना॥

गर भूल भी जाऊँ मैं तुमको पर मुझको भूल न जाना तुम।
आकर तुम किसी बहाने से मेरी भूल भी याद दिला देना॥

तुम जग तारन जग माता हो मैं तेरा ही एक बालक हूँ।
ऐ चंचल हृदय के आँगन में एक दया की जोत जगा देना॥

* * *

॥ भजन १३ ॥

पहाड़ों से निकल आओ, माँ तेरे द्वार आया हूँ
माँ तेरे द्वार आया हूँ।
मैं रोता सिसकता चरणों में जारो जार आया हूँ
मैं जारो जार आया हूँ॥

निकल आ माँ तूँ पत्थरों से न पत्थर दिल को करना माँ,
तुम्हारी ज्योति नूरानी से रोशन दिल है करना माँ,
सहे सदमे जहाँ भर के मैं हो लाचार आया हूँ॥ माँ तेरे……

मेरी विनती सुनो अब माँ जमाने का सताया हूँ,
करूँ भेंटा मैं दुःख अपने यही फरियाद लाया हूँ,
मेरी बिगड़ी बना दो माँ मैं अवगुण हार आया हूँ॥ माँ तेरे……

हजारों पापियों को माँ दरश पल में दिखाया है,
न जाने "लाल" सेवक को भला कैसे भुलाया है,
खताये माफकर मेरी यही पुकार लाया हूँ॥ माँ तेरे……

॥ भजन १४ ॥

मेहर करदो मेरी जननी तेरे दरबार आये हैं
तेरे दरबार आये हैं।
भरोगी कब मेरी झोली मेरी सरकार आये हैं
मेरी सरकार आये हैं ॥

किसे अपना कहें माता किसे अपना बनायें हम,
किसे यह हाल दिल सारा जगत जननी सुनायें हम,
पकड़ रक्खा है दामन को जमाने के सताये हैं ॥
तेरे दरबार आये हैं ॥

अगर तुम रूठ जाती हो तो किस्मत रूठ जाती है,
ये किस्ती डगमगाती है भँवर में डूब जाती है,
दया की दृष्टी अब फेरो तेरे दरबार आये हैं ॥
तेरे दरबार आये हैं ॥

दिखाओ अपनी वो शक्ति, भरो रग रग मेरे भक्ति,
तुम्हारे ही भरोसे है भला फिर भी रही शक्ति,
हृदय की भेंट लेकर के तेरे दरबार आये हैं ॥
तेरे दरबार आये हैं ॥

तुम्हारे जो पुजारी हैं भला वो क्यों भिखारी हैं,
दो भोलानाथ को शक्ति वो शरणागत तुम्हारी है,
रखोगी हाथ कब सर पर तेरे दरबार आये हैं ॥
तेरे दरबार आये हैं ॥

॥ भजन १५ ॥

आ जाओ शेरां वाली दर्शन का मैं हूँ प्यासा
दे जाओ रोते दिल को थोड़ी सी तो दिलासा
आ जाओ शेरां वाली……

कब से भटक रहा हूँ दुनियाँ की आंधियों में
फिरता हूँ मारा मारा अनजानी वादियों में
हर ओर दिख रही है मुझको तो अब निराशा
आ जाओ शेरां वाली……

चरचे सुने हैं तेरे जब से गली गली में
तुझको पुकारता हूँ अनजानी बेखुदी में
बैठा हूँ द्वार पर मैं माँ तेरे कुछ ठगा सा
आ जाओ शेरां वाली……

लेता हूँ नाम तेरा एक ये ही काम मेरा
फिर भी क्यूँ छूटता है मुझ से ये धाम तेरा
उलटा पड़ा है मेरी किस्मत का आज पासा
आ जाओ शेरां वाली……

मूरत तो देखता हूँ सूरत भी अब दिखा दो
चरणों में अपने दाती मुझको भी आसरा दो
तेरे लिए तो मैया ये काम है जरा सा
आ जाओ शेरां वाली……

माँ की ज्योति

मैया तेरी ज्योति रे-२

चाँद सितारे छिपे छिप जाए सूरज
ये तो मन्द भी न होती रे
मैया तेरी ज्योति रे······

जलती ही जाए ये दिन राती ये दिन राती
तेल कहाँ है कहाँ इसकी बाती कहाँ इसकी बाती
उदित कहाँ से होती रे
मैया तेरी ज्योति रे······

ये तो समाई हर एक तन में हर एक तन में
पर कौन आके देखे है मन में देखे है मन में
विदित न सबको होती रे
मैया तेरी ये ज्योति रे······

जिसने भी पाई तेरी ये ज्योति
कांकर सा जीवन बन जाए मोती
फलित मुरादें होती रे
मैया तेरी ये ज्योति रे······

● ● ●

॥ भजन १६ ॥

चलो वैष्णव माँ के द्वारे भक्तों पाप कटेंगे सारे।
चलो विन्ध्याचल के द्वारे भक्तों पाप कटेंगे सारे ॥ टे० ॥

नैन हीन को नैन देवे और कोढ़ी को देवे काया,
निर्धन को धन और धनी को देती देखो माया,
सभी चलो दरबार मैया के बोलो जै जै कारे ॥
भक्तों पाप कटेंगे सारे ॥ चलो ॥

कोई पैदल कोई हवा पै कोई चढ़े अशवारी,
माँ का दर्शन करने खातिर भीड़ चली है भारी,
सबकी आशा पूरी होगी आज इसी के द्वारे ॥
भक्तों पाप कटेंगे सारे ॥ चलो ॥

माँ की महिमा देखी सबने शक्ती उसकी मानी,
माँ का दर्शन उसी को मिलता जो न होय अभिमानी,
सच्चे दिल से जो भी पुकारे माँ उसी के भरे भंडारे ॥
भक्तों पाप कटेंगे सारे ॥ चलो ॥

तीन रूप में माँ का दर्शन देखा ध्यान लगाके,
जो चाहा सो ही फल पाया पल को नैन झुका के,
संग भगत सब गाये आरती नाम जपे सो पाये ॥
भक्तों पाप कटेंगे सारे ॥ चलो ॥

अत्याचार देख कंश का ऋषियों ने करी दुहाई,
बिजली बनके कड़की बोली ये विन्ध्याचल माई,
ऐसा चक्र चलाया माई ने चुन-चुन पापी मारे ॥
भक्तों पाप कटेंगे सारे ॥ चलो ॥

॥ भजन १७ ॥

तेरी महिमा सुनी अपार मैया इस कलियुग में।
तैनूं पूजे सब संसार मैया इस कलियुग में॥
जम २ आवे तेरा आसु ये सुहावा, द्वारे तेरे ते बजत वधावा।
हो रही जै जै कार मैया इस कलियुग में॥
पर्वत ऊपर भवन सुहाना, मात वैष्णव करे ठिकाना।
बैठी खोल भंडार मैया इस कलियुग में॥
दूरों २ दाती संघता आइयाँ, ध्वजा नारियल भेंट ले आइयाँ।
सबनूं दे दीदार मैया इस कलियुग में॥
मेरे वी माँ कष्ट मिटावी देर न लावी जल्दी आवी।
हो के शेर असवार मैया इस कलियुग में॥
अपने चरणां दे विच्च लाले, "चमन" नूं अपना दास बनाले।
ऐना कर उपकार मैया इस कलियुग में॥

॥ भजन १८ ॥

लगन तुझसे लगा बैठे जो होगा देखा जायगा।
तुझे अपना बना बैठे जो होगा देखा जायगा॥

कभी दुनियां से डरते थे तो छुपछुप याद करते थे।
है अब पर्दा उठा बैठे जो होगा देखा जायगा॥

कभी यह ख्याल था दुनियाँ हमें बदनाम कर देगी।
शर्म अब बेच खा बैठे जो होगा देखा जायगा॥

दिवाने बन गये तेरे तो फिर दुनियाँ से क्या मतलब।
जो सबसे दिल हटा बैठे जो होगा देखा जायगा॥

मैं हूँ सर्वस्व दे सकता तुम्हारे इक इशारे पर।
है दिल पुखता बना बैठे जो होगा देखा जायगा॥

तुम्हारी बेरूखी से दिल यह मेरा टूट जायेगा।
"चमन" जीवन लुटा बैठे जो होगा देखा जायेगा॥

॥ भजन १६ ॥

तेरे मन्दिर में किस्मत आज़माने हम भी आये हैं।
तेरे नजदीक भजनों को सुनाने हम भी आये हैं॥

हजारों दिल में अरमानों की ख्वाहिश लेके आये हैं।
उबारो या मिटा दो माँ नहीं कुछ लेके आये हैं॥

हृदय में जोश दिल में आसरा आँखों में है आँसू।
तेरे कदमों में सर अपना झुकाने हम भी आये हैं॥

तमाशा हम भी अपना देखते हैं ठोकरें खाकर।
बस अफशाना है इतना ही अधूरा लेके आये हैं॥

भुलाई जा नहीं सकती जो देखी ज्योती में मूरत।
तेरी तशवीर के आगे हम पारस बन के आये हैं॥

भरा भंडार भक्ती भाव का दिल में जो तूंने है।
वही 'श्रीकान्त' भजनों में सुनाने दरपे आये हैं॥

सभी विषयों को मनसे त्यागकर माँ की शरण में आ।
यही भजनों में कहने को ये "गोविन्द" आज आये हैं॥

॥ भजन २० ॥

दर पर बैठा तेरे कब से दर्शन दे दो माँ काली ॥

मोह माया में फंसा हुआ हूँ, आके मुझे बचाओ,
क्षमा करो अपराध हमारा अवगुण सब विसराओ,
तज के आया हूँ जग सारा दर्शन दे दो माँ काली ॥

बहुत दिनों से भटक रहा हूँ मैं दुनियाँ में तेरे,
महिमा तेरी सुनकर आया चरणों में अब तेरे,
दर से जाये कैसे खाली दर्शन दे दो माँ काली ॥

तुम्ही बताओ हे जगजननी कैसे तुम्हें रिझाऊँ,
ध्वजा नारियल तुम्हें चढ़ाऊँ तेरा ही गुण गाऊँ,
अब तो मुझे आसरा तेरा दर्शन दे दो माँ काली ॥

द्वार क्षमा का खोलो मैया सेवक हम हैं तेरे,
सफल मनोरथ कर दो सारे आया द्वारे तेरे,
पूरी कर दो यह अभिलाषा दर्शन दे दो माँ काली ॥

॥ भजन २१ ॥

बता दो हे जगत् जननी मेरा उद्धार कैसे हो।
बह रहा हूँ अगम धारा ये बेड़ा पार कैसे हो॥

न श्रद्धा है न भक्ती है न कुछ विद्या न बल बुद्धी।
तेरे दासों में हे माता मेरा शुम्मार कैसे हो॥

बहुत भटका हूँ विषयों में कहीं भी शान्ती नहिं पाई।
फंसा मद मोह माया में मेरा निस्तार कैसे हो॥

चले अविवेक की आँधी नहिं कुछ सूझ पड़ता है।
मेरे हृदय के मन्दिर में तेरा दीदार कैसे हो॥

मैं जैसा हूँ तुम्हारा हूँ भरोसा आपका भारी।
तो फिर किससे करूँ फरियाद मंजिल पार कैसे हो॥

सहारा दो महाशक्ति मैं पंगु दीन हीना हूँ।
वड़ी उलझन में उलझा हूँ अहो करतार कैसे हो॥

यही विनती है सेवक की जगत को प्रेममय देखूं।
करूँ बलिदान स्वांरथ का यह पर उपकार कैसे को॥

॥ प्रार्थना ॥

मेरे दिल में मेरी माता, तू अपना नाम रहने दे।
और अपने नाम की भक्ति, सदा निष्काम रहने दे॥
खुशी क्या उसके मिलने की, जो मिलकर के बिछड़ जाए।
मैं चाहता हूँ तड़फता हूँ, सुबहा और शाम रहने दे ॥१॥

नहीं मैं मान का भूखा, नहीं परवाह लोगों की।
जुदा करना न चरणों से चाहे बदनाम रहने दे ॥२॥

अगर कटने नहीं देते सबर से जिन्दगी मेरी।
तो अपनी याद में वेशक मुझे बे-आराम रहने दे ॥३॥

मेरे अपमान और इज्जत की, ठेकेदार बनजाओ।
तुम्हारा नाम हो जाए मुझे गुमनाम रहने दे ॥४॥

मेरे दिल की विनती को जरा दिल थाम कर सुनले।
पड़ा दर पे भिखारी को मेरी हे मात रहने दे ॥५॥

॥ भजन २२ ॥

तुमने कभी क्या माँ के दर्शन किए हैं बोलो
तुमको कभी क्या माँ ने दर्शन दिए हैं बोलो
वो देखो मेरे सामने साक्षात माँ खड़ी है
वो देखो मेरे............

अनुपम है रूप तेरा शेरो की है सवारी
मुख पे है तेज तेरे मुस्कान तेरी प्यारी
धनु और कमल से शोभा कैसी बढ़ी चढ़ी है
वो देखो मेरे सामने साक्षात माँ खड़ी है।

सोने का मुकुट सिर पर सोने का हार सोहे
अद्भुत् छवि है प्यारी मन बार-२ मोहे
पावों में पेंजिनी है हीरों से जो जड़ी है
वो देखो मेरे सामने साक्षात माँ खड़ी है।

उज्जवल से दोउ नयना चंदन बदन है न्यारा
उपमा मिली न कोई देखा ये जग है सारा
ओ सूवे चोले वाली महिमा तेरी बढ़ी है
वो देखो मेरे सामने साक्षात माँ खड़ी है।

विष्णु महेश ब्रह्मा निस दिन करें हैं पूजा
दानी तेरे ही जैसा मिला न मुझको दूजा
मन में बसाया तुमको जबसे नजर पड़ी है
वो देखो मेरे सामने साक्षात माँ खड़ी है।

हर निर्बल को मात तुमने बढ़ कर दिया सहारा
मैं धन्य हो गया हूँ पाकर दर्श तुम्हारा
आओ सभी निहारें अनुपम यही घड़ी है
वो देखो मेरे सामने साक्षात माँ खड़ी है।

तुमने कभी क्या माँ के दर्शन किए हैं बोलो
तुमको कभी क्या माँ ने दर्शन दिए हैं बोलो
वो देखो मेरे सामने साक्षात माँ खड़ी है।

॥ भजन २३ ॥

तेरा हूँ मुझे मात अम्बे बचालो।
दुःखी जानकर के हृदय से लगालो॥

तूँ ही देख ले ये भवर में है नैइया,
तुम्हारे सिवा कौन मेरा खेवैइया,
ये किस्ती हमारी है तेरे हवाले॥ तेरा हूँ० ॥

लगन है दरश की तुम्हारी भवानी,
सुनो माँ मेरी तूँ अधूरी कहानी,
लगी लौ तुम्ही से ये दिल में जचालो॥ तेरा हूँ० ॥

करोड़ो दफा मैंने तुमको पुकारा,
तड़फता है सेवक तेरा ही सहारा,
तूं चाहे तो इसको भले आजमाले॥ तेरा हूँ० ॥

॥ भजन २४ ॥

माँ के आए नवराते भक्तों ने किए जग राते
सबने मिल ज्योत जलाई घर-२ जगदम्बे आई
घर-२ जगदम्बे आई............
माँ के दर्शन करने का क्या सुन्दर अवसर आया
क्या सुन्दर अवसर आया
भक्तों ने माँ के द्वारे आ अपना भाग्य जगाया
आ अपना भाग्य जगाया
लगन लगी थी जो दिल में आज वही रंग लाई
घर-घर जगदम्बे आई............
खुशी हुए नर-नारी देखो फूले नहीं समाते
वो फूले नहीं समाते
माँ की मूरत वसा के मन में अम्बे के गुण गाते
माँ अम्बे के गुण गाते
देख के भक्तों की ये भक्ति मैया भी हर्षायी
घर-घर जगदम्बे आई............
चाहो तो तुम जीवन को हर सुख से भर सकते हो
सुख से भर सकते हो
नवरातों में नवदुर्गे के दर्शन कर सकते हो
दर्शन कर सकते हो
इन्हीं दिनों में सब भक्तों की होती है सुनवाई
घर-घर जगदम्बे आई............

जहाँ भी देखो माँ की मूरत वहीं ध्यान तुम धरलो
वहीं ध्यान तुम धरलो
माँ तो है आई की आई मन से सुमिरन करलो
मन से सुमिरन करलो
शिव शक्ति मण्डल ने ये युक्ति सदा अपनाई
घर-घर जगदम्बे आई.........

॥ भजन २५ ॥

जय-जय हे जगदम्बे माता
द्वार तिहारे जो भी आता बिन मांगे सब कुछ पा जाता
जय-२ हे जगदम्बे माता

पापी हो या होय पुजारी, राजा हो या होय भिखारी
फिर भी जोड़ा तूने सबसे माँ बेटे का नाता
जय-२ हे जगदम्बे माता

जब-जब जिसने तुझको पुकारा, तूने दिया है बढ़के सहारा
हर भूले राही को तेरा प्यार ही राह दिखाता
जय-जय हे जगदम्बे माता

तू चाहे तो जीवन दे दे, चाहे तो पल में जीवन लेले
जन्म मरण सब तेरे हाथों हे शक्ति हे दाता
जय-२ हे जगदम्बे माता

॥ भजन २६ ॥

दुर्गे मेरा सहारा तेरे सिवा नहीं है।
आधार एक तूँ है बस दूसरा नहीं है॥

तूँ बन्धू तूँ सखा है तूँ बाप तूँ ही माँ है।
तेरे सिवाय कोई माता पिता नहीं है॥

वह कौन वस्तु लाऊँ जिसको तुम्हें चढ़ाऊँ।
जो कुछ है सब तेरा है कुछ भी मेरा नहीं है॥

मैं भी तो मैं नहीं हूँ मेरा कहाँ ठिकाना।
सर्वस्व तूँ है अम्बे तूँ क्या है क्या नहीं है॥

॥ भजन २७ ॥

मेरी अम्बे यही तुमसे सदा बिनती हमारी है।
हमारी याद किस अपराध से तुमने बिसारी है॥

फँसे हैं हम जो माया में छुड़ाती क्यों नहीं हमको।
तुम्हीं कहदो खता किसकी हमारी या तुम्हारी है॥

बड़ा होता है दुःख तुमको दयामयी शक नहीं इसमें।
तुम्हारा भक्त जब संसार में कोई दुःखारी है॥

खड़ा दरबार में तेरे ये सेवक झोली लेकर के।
उसे दो भीख करुणा की तुम्हारा ही भिखारी है॥

॥ मां के शिंगार का वर्णन ॥

मैया तेरे आँगन में जगमग ज्योति जगे।
शीतल मन्द बहे गंगा को चन्दन की जामे नाव चले॥

(१)

हरो हरो पीपर भवन विराजे ऊपर लाल ध्वजा फहरे।
लाल भवन विच बैठी मेरी माता भक्तन का दुःख दूर करै॥

(२)

मांग सिन्दूर भाल विच बेन्दी, झुमका रतन जड़े।
अटल सिंहासन बैठी मेरी ज्वाला, शिर सोने का छत्र धरै॥

(३)

कोई गावै कोई नाच फिरावे कोई दंडवति करे।
पूजा अर्चन पाठ करै कोई, कोई उपवास करे॥

(४)

जो तोहे ध्यावे सोई फल पावे जोजस जतन करे।
दास "प्रकाश" चरण रज चाहत माँ हमहू पै दृष्टी परै॥

॥ देवी दर्शन ॥

माता के चरण कमलों के तले, जर्रे भी सितारे होते हैं।
बनता है मुकद्दर उनका जो तकदीर के मारे होते हैं॥

(१)

जो आँख न झपके क्षण भरको, वह आँख के तारे होते हैं।
जो राज सिंहासन को तजदे, वह राज दुलारे होते हैं॥

(२)

जब आत्म समर्पण होता है माता का दर्शन होता है।
जब सुध-बुध विसरी होती है फिर वारे न्यारे होते हैं॥

(३)

जब मन की भट्टी तपती है, नयनों से आग बरसती है।
दर-दर अंधियारे होते हैं, जगमग उजियारे होते हैं॥

(४)

इस वैतरणी की थाह नहीं, इस भूमंडल में होने की।
गंगा के किनारे होते हैं, यमुना के किनारे होते हैं॥

(५)

ऐ तंग नज़र नज़रे न उठा नज़रों को झुका नज़रों को बिछा।
नज़रों को बिछाने वालों की नज़रों में नज़ारे होते हैं॥

॥ भजन २८ ॥

चाहे जैसे भी मानो तुम मनाये बिन न छोड़ेंगे।
रिझाने पर न रीझोगी खिझा करके ही छोड़ेंगे॥

किया है प्रेम तुमसे जब तो किससे प्यार चाहेंगे।
जो रूठोगी अगर जननी चरण धर सर मनायेंगे॥

न जाना है किसी को कुछ सभी कुछ तुमको माना है।
समझ कर बूझ कर जननी तुम्हे स्वामिनी बनाया है॥

तुम्हारे रीझने पर जो वही तो खीझने पर भी।
हैं दोनों हाथों में लड्डू तो सेवक कैसे चूकेंगे॥

॥ भजन २९ ॥

लगालो मात चरणों में जमाने का सताया हूँ
जमाने का सताया हूँ।
मैं दिल की दास्तां सारी सुनाने दर पै आया हूँ
सुनाने दर पै आया हूँ॥

दिया था जन्म जब तुमने खुशी सबने मनाई थी,
करी हर आरजू पूरी दया तेरी ही पाई थी,
सम्हलती अब नहीं बिगड़ी बड़ी गर्दिश में आया हूँ॥ जमाने०

यहाँ अपने व गैरों का बुरा दस्तूर देखा है,
बिगड़ती में सदा अपने को ही मज़बूर देखा है,
यहाँ कोई नहीं अपना मैं मुफलिश बन के आया हूँ॥ जमाने०

मैं रो रो पाप की गठरी रखी है सामने तेरे,
रहम कर आज मुश्किल में हटा उलझन के सब फेरे,
मुरादा मांगने 'शर्मा' सच्चे दरबार आया हूँ ।। जमाने०

।। भजन ३० ।।

जगदम्बे जगतारन वाली ले मेरी खबरिया ।
ढूंढ़-ढूंढ़ कर तुमको माता थक गई ये नजरिया ।। जगदम्बे०

कहाँ छुपी हो बतलाओ माँ आऊँ तेरे द्वार माँ,
मुद्दत से इन दो नैनों को लगी दरश की आश माँ,
पल पल मनवां रोये बरसे नैनों से बदरिया ।। जगदम्बे०

भूल गई क्यों मुझको आखिर मैं भी तेरा लाल हूँ,
आज बिछुड़ कर तुझ से जननी हुआ बहुत बेहाल हूँ,
अब तो बिना तुम्हारे सूनी जीवन की नगरिया ।। जगदम्बे०

नील गगन पर रहने वाली आज तेरे दरबार में,
दुखिया सेवक अरज गुजारे आजाओ संसार में,
अब ना देर लगाओ बीती जाती है उमरिया ।। जगदम्बे०

॥ दोहा ॥

नाव पड़ी मझधार में, सुनले मेरी पुकार।
आकर पार उतारियो, होय सिंह असवार॥

॥ भजन ३१ ॥

आई सिंह पै सवार मैया ओढ़े चुन्दरी ॥ टे० ॥

आदि शक्ति हे मात भवानी जै दुर्गे माँ काली,
बड़े-बड़े दानव संहारे रण चण्डी मतवाली,
करती भक्तों का उद्धार मैया ओढ़े चुन्दरी ॥ १ ॥

महिषासुर सा महाबली देवों को खूब सताया,
छीन लिया इन्द्रासन और देवों को मार भगाया,
करी देवों ने पुकार मैया ओढ़े चुन्दरी ॥ २ ॥

दुर्गा का अवतार लिया झट महिषासुर संहारी,
दूर किया देवों का संकट लीला तेरी न्यारी,
किया देवों पै उपकार मैया ओढ़े चुन्दरी ॥ ३ ॥

जो कोई जिस मंशा से मैया द्वार तिहारे आता,
हर इच्छा होती पूरी औ मुंह मांगा फल पाता,
तेरा गुण गावै संसार मैया ओढ़े चुन्दरी ॥ ४ ॥

कष्ट अनेकों मुझ को घेरे कौन हरे दुःख मेरे,
नाम तेरा रटता हूँ मैया मैं हर सांझ सवेरे,
"राजू" करता है पुकार मैया ओढ़े चुन्दरी ॥ ५ ॥

॥ भजन ३२ ॥

भवानी आपके गुण गाने वाले और होते हैं।
तुम्हारे नाम पर मिट जाने वाले और होते हैं॥
जगत् है धर्म की नैइया सवारी पुण्य पापों की।
खेवैया की नज़र अपनाने वाले और होते हैं॥
दरश का मैं भिखारी हूँ नहीं माया पुजारी हूँ।
विषय में भटक कर मर जाने वाले और होते हैं॥
पिला कर भक्ति का प्याला बनाले अपना मतवाला।
वो शाकी और प्याले पीने वाले और होते हैं॥
बहुत से मंडलों में भी तेरी गाथा मैं सुनता हूँ।
मगर 'श्रीकान्त' मंडल के सितारे और होते हैं॥

॥ भजन ३३ ॥

माँ तेरे गुणगान हरदम गायेंगे।
कैसे रूठोगी हम तुम्हें मनायेंगे॥

रूठना तो माँ तेरा आसान है, पर मनाना भी हमारा काम है
दे दया की भीख अब घर जायेंगे॥ कैसे रूठोगी·········
इक भरोसे आपके सम्मान है, नहिं बुरे अच्छे का कुछ भी ज्ञान है
फिर उजाले हम कहाँ से पायेंगे॥ कैसे रूठोगी·········
हरती जब संकट सदा से भक्त का, भर देवो भक्ति का सागर भक्तका
इस भरोसे आप के तर जायेंगे॥ कैसे रूठोगी·········
जब कृपा की इक नज़र हो जाएगी, खुद अँधेरे में उजाला लायेगी,
नाम भोला भी अमर कर जायेंगे॥ कैसे रूठोगी·········

॥ भेंट ॥

दूरों दूरों चल चल आइयां संगता तेरे द्वारे।
हंस मुख मुखड़े नाल खुशी दे बोलन जै जै कारे॥ दूरों०

मस्तक तिलक फुलन गल माला कान्धे ध्वजा सजाइयाँ,
दरश करन दी खुशियाँ दे विच लालियाँ मुहते छाइयाँ,
लालो लाल सर जाणे सजदे देखन दे नज़ारे॥ दूरों०

मस्त सुरिली आवाज उन्हादी, दिल नूँ पई लुभावदी,
सुन-सुन के आवाज उन्हादी खलक़त चल-चल आवदी,
बज दे छैनेते नाल मृन्दगा वाजन दे नगारे॥ दूरों०

कही चल दे कही रुक-रुक जान्दे भेटां मैया दीयां गावदे,
पग घुघरू हत्थ विच्च खड़ताला गांदे मस्त हो जावदे,
खुशियाँ मना दे लगदे जान्दे गलियाँ ते वाजारे॥ दूरों०

उचियाँ-उचियाँ घाटियाँ चढ़दे जय माता दी बुलावदे,
भवन ते जाके कंजका जुवादे मुँह मगियाँ मुरादा पावदे,
जन्म जन्मान्तर दे दुःख विसरान्दे भवसागर तर जान्दे॥ दूरों०

धन-धन भाग उन्हादे कहिये जाके दर्शन पावदे,
भेंटा चढ़ादे भूल वक्शांदे झोलियाँ भर ले जावदे,
'जगदीश' कहे माता रणवाली तेरे हत्थ संसार दे॥ दूरों०

● ★ ●

॥ भजन ३४ ॥

जिसके नाम की ये दुनियाँ सदियों से दिवानी है।
वो सबकी जानी पहचानी शेरांवाली भवानी है॥
जिसके गुण गाते हैं, जग के सब नर-नारी,
उसकी क्या बात कहें, उसकी लीला न्यारी,
सब देवों ने जिसकी बड़ी शक्ति मानी है॥ वो सब की० ॥
जब से मन मन्दिर में हुआ माँ का वसेरा है,
फैला फिर उजियाला हुआ दूर अँधेरा है,
अब आठो पहर जिसकी लौ मैंने लगानी है॥ वो सब की० ॥
मुझे माँ की ये मुरतिया चारों ओर नजर आये,
ऐसी ममता की देवी कहाँ और कोई पाये,
जिसके चरणों में एक दिन जिन्दगी मुस्कानी है॥ वो सब की० ॥

॥ भेंट ॥

इक बार तुम्हारी रहमत का गर हमको इशारा हो जाता।
कुछ मंजिल आशां हो जाती कुछ दिल को सहारा हो जाता॥
इक नाम का जाम पिला देती आकर माँ अपने हाथों से।
तो इस जनम मरन के बन्धन से अपना छुटकारा हो जाता॥
थोड़ी सी जगह गर मिल जाती हमको तुम्हारे चरणों में।
कदमों में तेरे हे जगदाती हम सब का गुजारा हो जाता॥
आज़ाद खुशी से मर जाता मुझे गम ना होता मरने का।
पर मरने से पहले हे जगदाती दीदार तुम्हारा हो जाता॥

॥ भेंट ॥

ज्योति जगी है और है सुमिरन भजन की रात।
कितनी हँसीं है माई तेरे जागरन की रात॥

ध्यानूँ ने तेग रख के गले पर यह कह दिया।
आजा के फिर ना आयेगी माता मिलन की रात॥

फूलों से सज रहा है यूँ दरबार माँ तेरा।
जैसे के बस गई हो नज़र में चमन की रात॥

सजदे में जब के शर हो मगर तूँ न हो करीब।
वो रात मेरे दिल के लिये है जलन की रात॥

आँखे हैं बन्द और तसब्बर में रूप है।
ये हाल है कि जैसे तेरे भवन की रात॥

बैठा है लिखने प्रेम से भेटे तेरी फलक।
माता कभी भी खत्म न हो ये कथन की रात॥

॥ भेंट ॥

शेरां वाली बुलालो मुझे भी द्वार आने के काबिल नहीं हूँ।
मैं गुनाहगार हूँ माफ कर दो सर झुकाने के काबिल नहीं हूँ॥

गरदिशों में मैं ऐसा फंसा हूँ जैसे बदली में चन्दा छुपा हो।
जुल्म वो ढा रहा है ज़माना जो बताने के काबिल नहीं हूँ॥

खुश्क लब आँखे पथरा गई हैं धड़कनों का भरोसा नहीं है।
जिन्दगी मौत से लड़ रही है, लब हिलाने के काबिल नहीं हूँ॥

गम ने मारा है गम ने सताया, गम ने मुझको परेशां किया है।
गम में मैं इस कदर दब चुका हूँ, गम उठाने के काबिल नहीं है॥

मुझको परवाह नहिं है जमाना रूठता है तो रूठे खुशी से।
इल्तजा है न तुम रूठ जाना हम मनाने के काबिल नहीं हैं॥

दिल में आजाओ मेहमान बनकर मुन्तजिर है मुरारी सबर कर।
दर्द दिलका बढ़ा जा रहा है जो दबाने के काबिल नहीं है॥
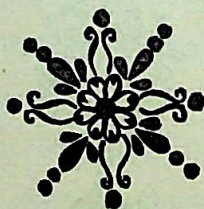
॥ भेंट ॥

शेराँवाली का जै जै कारा है प्यारा-प्यारा बोलो जी जरा जोर से,
माँ को बांधेंगे भक्ति की डोर से।

है इस जग की झूठी माया काहे मनवां भटकाओ,
बार-बार नर तन नहि मिलना अन्त समय पर पछताओ,
जागो-जागो सोने वालों माता को अपनालो,
माँ का द्वारा है जग से न्यारा, सजाओ चारों ओर से,
माँ को बांधेंगे भक्ति की डोर से॥ शेराँवाली·········

इन नैनन की खोल केवड़िया, माँ से ध्यान लगालो तुम,
हृदय के दर्पण में अद्भुत माँ का रूप बसालो तुम,
जोत जगालो, दर्शन पालो, ऐ माता के लालो,
आओ आओ लो हिलमिल गाओ चमन की हिलोर से,
माँ को बांधेंगे भक्ति की डोर से॥ शेराँवाली·········

माँ न्यारी माँ की महिमा भी न्यारी सारे जग की है प्यारी
दुष्टों के हृदय में कटारी भक्तों के हित फुलवारी,
मंगल करनी है दुःख हरनी जगदम्बे जगजननी,
आँखे खोलो जै माता की बोलो गरज घनघोर से,
माँ को बांधेंगे भक्ति की डोर से॥ शेराँवाली·········

माँ के चरणों में जो अपना जीवन अर्पण करते हैं,
वो जीते जी अमर नगिना भव सागर से तरते हैं,

सांझ सकारे, चित्त में धारे, माँ के जाये द्वारे,
नाचे गाये 'फलक' लहराये मगन मन मोर से,
माँ को बांधेंगे भक्ति की डोर से ॥ शेराँवाली........

॥ भेंट ॥

शेराँवाली के दुवारे मेले नित होयेंगे ॥ टेक० ॥

जिसको बर देवे माता, उसे मेटे ना विधाता,
जो भी दर तेरे आता, खाली मुड़ के न जाता ॥
मेले नित होयेंगे.........

तूँ है आदि शक्ति महारानी, महिमा वेदों ने है मानी,
हम हैं बालक माँ अज्ञानी, करते रहते हैं नादानी ॥
मेले नित होयेंगे.........

तेरा पार कोई नहि पाया, है अपार तेरी माया,
अबकी बक्सो सावल माया, तेरा युग-युग राज सवाया ॥
मेले नित होयेंगे.........

तेरा पंथ मेरे मन भाया, तूँने सारा जगत बनाया,
शरणागत तेरी ध्यानूँ आया आकर अपना शीश चढ़ाया ॥
मेले नित होयेंगे.........

तेरा भोला ने यश गाया, सेवक को क्यों मनो भुलाया
चरणों में है शीश झुकाया, माँ ने हमको क्यों विसराया ॥
मेले नित होयेंगे.........

॥ भेंट ॥

सारे जगत् की दाती तेरी ज्योत जगमगाती।
तेरा दर सभी को भाया तेरा दर सभी को भाया ॥

अपना कोई ठिकाना हमने नहि बनाया,
संसार छोड़ करके दरबार तेरे आया।
जिसने भी तेरे गुण को अपनी जुवां से गाया,
तेरा दर सभी को भाया तेरा दर सभी को भाया ॥

दुनियाँ की इस चमन को तूंने ही है बनाया,
हर शाख-शाख पर है तेरी ही फैली माया।
जिसने भी मैया तेरी भक्ति का दान पाया,
तेरा दर उसी को भाया तेरा दर सभी को भाया ॥

तेरी शोभा चाँद तारे दुनियाँ के हर नज़ारे,
हर मन में तूँ बसी है सब हैं तेरे सहारे।
तेरा दास आज दर पै 'दरशन' को तेरे आया,
तेरा दर उसी को भाया तेरा दर सभी को भाया ॥

॥ भेंट ॥

जमीं का फूल अम्बर का सितारा हम भी देखेंगे
माँ तेरे मुखड़े का नजारा हम भी देखेंगे
जमीं का फूल अम्बर............

कभी होगी तेरी ज्योति से माता जिन्दगी रोशन
कभी जलवों को इन आँखों का तारा हम भी देखेंगे
जमीं का फूल अम्बर............

नजर संसार पर है और मन है तेरे चरणों में
किधर ले जाएगा किस्मत का धारा हम भी देखेंगे
जमीं का फूल अम्बर............

जो कांटे आज हैं कुछ गम नहीं कल फूल भी होंगे
तेरे दामन में जीने का सहारा हम भी देखेंगे
जमीं का फूल अम्बर............

वह दिन भी आएगा दाती तू खुद किश्ती संभालेगी
कभी मौजों के घेरे में किनारा हम भी देखेंगे
जमीं का फूल अम्बर............

कभी तो अपने चरणों में जगह दोगी मेरी दाती
कभी तो तेरी रहमत का इशारा हम भी देखेंगे
जमीं का फूल अम्बर............

जमाना कह रहा है अब फलक दाती का सेवक है
रहेगा कब तलक किस्मत का मारा हम भी देखेंगे
जमीं का फूल अम्बर............

॥ भेंट ॥

पहले करो निर्मल अपने मन को
फिर चलो-रे चलो-रे देवी दर्शन को

लोभी काया भोगी छाया
झूठा मद झूठी मोह माया
इनकी गठरी साथ न लेना
जाने से पहले तज देना
काम न आए जो राहों में छोड़ दो ऐसे धन को
पहले करो निर्मल अपने मन को............

है अजमाई बात ये माँ की
होगी सच्ची लगन जो माँ की
भवन पहुँचने से पहले ही
राह में होगी झाँकी माँ की
कन्या रूप धरे प्रगटेंगी राह में कहीं भी क्षण को
पहले करो निर्मल अपने मन को............

सच्चे मन से जो जाता है
वो माँ के दर्शन पाता है
पापी मन से जाने वाला
आते जाते दुख पाता है!
न आये विश्वास तो पूछो जाते जो दर्शन को
पहले करो निर्मल अपने मन को............

मन जब ये निर्मल हो जाये
दर्शन की तब प्यास सताये
तब कहना मुझे मात पुकारे
आज बुला रही अपने द्वारे
तब समझो कर रही है मैया सफल तेरे जीवन को
पहले करो निर्मल अपने मन को............

॥ भजन ३५ ॥

सारे जग की ठोकर खाकर माँ तेरी शरण में आया हूँ
आँसू के सिवा कुछ और नहीं माँ भेंट चढ़ाने आया हूँ

सबकी सुनने वाली तू बता, क्यूँ मेरी नहीं माँ सुनले
आखिर बालक माँ तेरा हूँ फिर क्यूँ न मेरी सुधले
हृदय से लगाले जगदम्बे पग-पग पर ठोकर खाया हूँ
आंसू के.........

चंदा को रचाने वाली बता क्यूँ मेरी रात अंधेरी है
करदे जो अमावस को पूनम कहाँ छिपी वो रोशनी है
होएगा उजाला जीवन में ये आस लगाए आया हूँ
आँसू के.........

जो बात माँ कहने आया हूँ वह बात मेरी सुननी है
दुख बालक का सुनकर भी माँ चुपचाप तू क्या बैठी है
नैया मेरी भव पार लगे ये बात माँ कहने आया हूँ
आँसू के.........

॥ भेंट ॥

बहुत सहा है दुःखड़ा अब पकड़ा-पलड़ा तेरा है।
बोल दाती बोल दरशन होगा कि नहीं-२ ॥

आज तुम्हे बतलाना होगा मैंने कौन कशूर किया,
तुमने अपने चरणों से क्यूँ इस बन्दे को दूर किया।
मुझको इन चरणों का परसन होगा कि नहीं ॥
बोल दाती.........

ये माना मैं बहुत बुरा हूँ मैंने पाप ही पाप किया,
मुझसे बढ़कर पापियों को माँ पलमें तुमने माफ किया।
मुझ से ज्यादा अपना वर्णन होगा कि नहीं ॥
बोल दाती.........

या तो मुझ से वादा करले सामने मेरे आने का,
या कोई ऐसा इन्तजाम कर दास को पास बुलाने का।
'हीरा' तर जाय ऐसा जतन होगा कि नहीं ॥
बोल दाती बोल दर्शन होगा कि नहीं ॥

॥ भजन ३६ ॥

तर्ज :-खिलौना जानकर

नज़र से दूर रहकर भी तूँ दिल से जा नहीं सकती।
ज़माना लाख ठुकराये ये माँ ठुकरा नहीं सकती॥

अजब हैं तेरी दुनियाँ के निराले खेल सब सारे,
कहीं है चाँद औ सूरज कहीं ये अनगिनित तारे।
कहाँ तक फैली है अवनी पता सब पा नहीं सकती॥ १॥

भवर में डोलती किश्ती किनारे का ठिकाना ना,
चले पुरवाई यूँ ऐसे कि जैसे तीर अनजाना,
के तुम बिन कौन है मेरा, क्या तुम भी आ नहीं सकती॥ २॥

जनम से आज तक मेरी तमन्ना तुझ से मिलने की,
मगर अफसोश है कि तूँ घड़ी दो भी न आ सकती,
दिखादे एक झलक आकर बुझा दे प्यास नैनों की॥ ३॥

बिना तेरे तेरी दुनियाँ मुझे कुछ भा नहीं सकती,
चली आ छोड़कर अम्बर मेरे जीवन की ये धरती,
जुदाई और सेवक से सही अब जा नहीं सकती॥ ४॥

॥ भजन ३७ ॥

इक बार तेरे दर पै जो सर को झुका गया।
दुनियाँ की रहमते वो तेरे दर से पा गया ॥

(१)

दोनों जहाँ की अज़मते सजदा करे उसे।
कहते हैं जो वशर तेरे सजदे में आ गया ॥

(२)

तेरा दीदारे खास मुयस्सर हुआ जिसे।
वो एक नूर बनके ज़माने पै छा गया ॥

(३)

शैदा हुआ दुनियाँ में जो तेरे पियार का।
बिगड़े हुए नशीब को पल में बना गया ॥

(४)

कौशल किसी भी चीज की उसको कमी नहीं।
चौखट पर तेरी आके जो दामन बिछा गया ॥

॥ भजन ३८ ॥

बतायें तुम्हें हम कि क्या चाहते हैं।
कृपा आपकी हो यही चाहते हैं ॥

तमन्ना न धन की न वैभव की ख्वाहिश।
फ़क़त पद कमल रज लिया चाहते हैं ॥

करें नित्य दर्शन तेरे नूपुरों का।
सहारे उसी के जिया चाहते हैं॥

लगी प्यास दिल में है मुद्दत से माता।
सुधा नेह दीजै पिया चाहते हैं॥

धरा क्या है जग में ऐ "श्रीकान्त" अपना।
तुम्हारा तुम्हीं को दिया चाहते हैं॥

॥ भजन ३९ ॥

आन पड़ा मैं द्वार पै तेरे कभी तो होंगे दर्शन तेरे
वो शेराँ वाली मैया वो जोता वाली मैया॥ आन पड़ा०

दरश दिखा ना तरसा, सामने आ सुनले सदा
मैयाऽ आ भी जा सुनले आजा आजा
वो शेराँ वाली मैया वो जोता वाली मैया॥ आन पड़ा०

नैन मेरे तरस रहे दरस बिना बरस रहे
मैयाऽ आ भी जा सुनले आजा आजा
वो शेराँ वाली मैया वो जोता वाली मैया॥ आन पड़ा०

दरश का मैं दिवाना, जोत का मैं परवाना
मैयाऽ आ भी जा सुनले आजा आजा
वो शेराँ वाली मैया वो जोता वाली मैया॥ आन पड़ा०
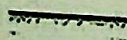
॥ भजन ४० ॥

हमारी भी सुनो हम तुम्ही से कहेंगे।
तुम लाख ठोकर मारो हम शरण में रहेंगे॥
ना कोई रिस्ता ना कोई नाता झूठा सभी सहारा है।
बिना तुम्हारे हे जग जननी जग में कौन हमारा है॥

अगर आके मेरी पकड़ी न बहियाँ,
पार लगेगी कैसे जीवन की नैइया,
भँवर में पड़ा हूँ किनारे लगादो,
दरश दिखादो माँ दरश दिखादो,
दीन गरीबों औ दुखियों की लाज तुम्हारे हाथ है॥
हमारी भी सुनो.........

वही जगह दो रहने की माँ जहाँ तुम्हारे पांव पड़े।
वही जगह दो सोने की माँ जहाँ तुम्हारे छांव पड़े॥

बिना तेरे एक पल कटना है मुश्किल,
बिना तेरे सासों के चलना है मुश्किल,
मुझे अपने चरणों की धूल बना लो,
या अपनी माला का फूल बना लो,
हीरा की विनती माँ सुनलो रहे तुम्हारे साथ है॥
हमारी भी सुनो.........

● ❀ ●

॥ भजन ४१ ॥

दया करो माँ दया करो, आया शरण तिहारे देवी दया क़रो।

जग जननी जग तारन वाली, सबकी बिगड़ी बनाने वाली।
बैठा आश लगाये देवी दया करो॥ दया करो माँ०.........

भूल चूक विसराओ मेरी, क्षमा करो अब करो न देरी।
नैया है मझधार देवी दया करो॥ दया करो माँ०.........

ब्रह्मा विष्णु गुण तेरे गावें, ऊमानाथ भी शीश झुकावे।
लज्जा राखो आज देवी दया करो॥ दया करो माँ०.........

॥ भजन ४२ ॥

दुनियाँ में जब मिला ना सच्चा कोई सहारा।
मैंने तुम्हें पुकारा माँ मैंने तुम्हें पुकारा॥

ओ जगत् जननी अम्बे, किस जां लगाया डेरा,
हर वक्त हर घड़ी माँ है इन्तजार तेरा।
इक बार सुनजा दुःख का अफसाना यह हमारा॥ मैंने०

इस मतलबी जगत में स्वारथ के ही हैं साथी,
जब प्यार करने वाली माँ तूँ है मेरी दाती।
क्यों भटकता फिरूं मैं दर छोड़कर तुम्हारा॥ मैंने०

किस्मत के लेख बदले तेरी दया निराली,
भंडारे से न तेरे कोई गया है खाली।
दर तेरे का सवाली है मइया जगत् ये सारा ॥ मैंने०

मस्ती में दाती मैंने जब तेरे गीत गाये,
आ बैठे गिरद मेरे सब अपने औ पराये।
सबने कहा 'चमन' तो है प्राणों से भी प्यारा ॥ मैंने०

॥ भेंट ॥

मेरे मन को दुःखों ने घेरा माई तेरा द्वारा छोड़ के।
किसके दर पै लगाऊँ मैं डेरा माई तेरा द्वारा छोड़ के ॥

चन्दा में नूर ज्योति सूरज में आई है,
शक्ति सभी ने माता तेरे दर से पाई है।
कैसे भाग जगेगा मेरा, माई तेरा द्वारा छोड़ के ॥१॥

जलवे अनोखे तेरे रूप निराला है,
तेरे भवन में माई नूर है उजाला है।
कोई कैसे पाये सवेरा, माई तेरा द्वारा छोड़के ॥२॥

रोशन है जोत जहाँ अम्बरी नजारे हैं,
माँ के भवन में सूरज चाँद सितारे हैं।
देखा चारों ओर अंधेरा, माई तेरा द्वारा छोड़के ॥३॥

अपनी दया से सोये भाग को जगाया है,
उसको ही तूंने इकदिन फूलों में बसाया है।
जिसने भक्ती से मुँह नहिं फेरा, माई तेरा द्वारा छोड़के ॥४॥

तेरा सहारा मेरा मन जो न पायेगा,
आशा का मोती मेरे हाथों से जायेगा।
मुझको लूटेगा जग ये लुटेरा, माई तेरा द्वारा छोड़के ॥५॥

रात अंधेरी माता जीवन पै छाई है,
तूंने 'फलक' की जब से सुध विसराई है।
भटका जग में ये सेवक तेरा, माई तेरा द्वारा छोड़के ॥६॥

॥ भेंट ॥

ओत्थे पाप कदे वी ना आवे, जित्थे माँ दी जोत जगदी।
गम दूर-दूर नस जावे जित्थे माँ दी जोत जगदी ॥

ब्रह्मा महेश-विष्णू बेद सुनावन्दे, गौरीलाल रिद्धी सिद्धी।
देवन आवन्दे, हनुमत-भैरो चँवर डुलावे ॥ जित्थे०......

अवतारां दा रूप है जोती, धरम सवेरा लांदी जोती।
जग जै जै कार बुलावे ॥ जित्थे०..... ...

अकबर जोती नूं अजमाया, ज्वाला जी नूं शीश झुकाया।
नालो सोने दा छत्तर चढ़ावे ॥ जित्थे०.........

जो जोती नूं शीश नवावन्दे, महाकाली दे दर्शन पावन्दे।
"शर्मा" हर विगड़ी बन जावे ॥ जित्थे०.........

॥ भेंट ॥

लंखा तर गये लंखा नूं तर जाना दुवारे तेरे शेराँ वालिये ।
अंखा वेख दे नशीवाँ वाले नज़ारे तेरे शेराँ वालिये ॥
मंगते लंखा तेरे दरते जान्दे, भर-भर झोलियां खैर ले आन्दे ।
भरे फेर आँखियां ने वेखे, भण्डारे तेरे शेराँ वालिये ॥
तन मन जो तेरे रंग विच्च रंग दे, वो भगत कितो खैर नहिं मंगदे ।
भरे रहमत जिन्होंने हो जान्दे, इशारे तेरे शेराँ वालिये ॥
तर गये वो जिन्हा दर्शन कीत्ते, नाल प्याले जिन्हा आँखां पीते ।
आँख ओदी भी कदी ना भुलाया, नज़ारे तेरे शेराँ वालिये ॥
मुन्सिफ येही दुवा है दिलदी, खैर फकीराँ नूँ येत्थो ई मिलदी ।
रहम बरसे कयामत ताँई दुवारे तेरे शेराँ वालिये ॥

॥ भेंट ॥

सच्चे दिल नाल मंगले जो मंगनाई,
ये दे दर तो है सब कुछ मिल सकदा ।
जिदे कब्जे में अर्श ते फर्श दोये,
बिना हुकुम न पत्ता हिल सकदा ॥
जिदा मान करे तो फिकर कादा,
ओ दी रहमता दा बन्दे जिकर कादा ।
जिनूँ आपये आसरा आन दवे,
बिना परलोके दरिया हिल सकदा ॥

हौन्दी रौनक विच्च बहारा दे,
फुल्ल खिड़ने नी विच्च गुलजारा दा।
जिस फूल ते ये नजरे करम करदे,
वो फूल खिजां में खिल सकदा॥

ये राम भी है ये रहीम भी है,
ये कृष्ण भी है ये करीम भी है।
जिस शकल में इसको याद करो,
ये उसी शकल में मिल सकदा॥

॥ भेंट ॥

चन्द तारयां ने आँखियां झुकाइया भवन दा नज़ारा देखके।
खिले फूल कलियाँ मुस्काइयां, भवन दा नज़ारा देखके॥
भाग्यों वाला आज दिन आया, रल मिल सबने मंगल गाया।
हुई सब दी सुफल कमाइयाँ, भवन दा नज़ारा देखके॥
रीझ सबा दे दिल विच्च रह गई, ठंड कलेजे सबके पड़ गई।
मैनूं रज रज दर्शन पाइयां, भवन दा नज़ारा देखके॥
मृन्दगा ते छैने बजदे, जैकारे माता दे गज़ दे।
सब भक्तां ने प्रेम नाल गाइयाँ, भवन दा नज़ारा देखके॥
सब पासे है अमृत वसदा, जर्रा जर्रा सब पया हंसदा।
मैं मुड़ मुड़ देवा वधाइयाँ, भवन दा नज़ारा देख के॥

॥ भेंट ॥

तैनूँ शक्ती शक्ती आँख दे शक्ती वाली तूँ।
तैनूँ शेराँवाली आँख दे शेराँवाली तूँ॥

तेरी सुन्दर मूरत सजदी है, दिल भक्तां अन्दर वसदी है।
तेरी शोभा बीच जहांन दे, जोतावाली तूँ॥

तूँ सूहा चोला पाया है, तूँ केशर तिलक लगाया है।
पाये दर्शन नाल प्रेम दे, भोली भाली तूँ॥

तेरे सोनेदा क्षत्र चढ़ाया है चल दिल्लियों अकबर आया है।
तूँ शक्ती रूप दिखाया है शेराँवाली तूँ॥

तेरा भक्तों ने जश गाया है, संग दूरों दूरों आया है।
तूँ दर्शन खूब दिखाया है, जोतावाली तूँ॥

॥ भेंट ॥

सच्चे दिल नाल प्रीती लगाले, जे दाती दा दीदार पावना।
विच्च मन दे तूँ जोत जगाले, जे दाती दा दीदार पावना॥
माता मेरी आदकवारी, जिसनूँ पूजे दुनियाँ सारी,
ओहदे चरणां दी धूल मत्थे लाले जे दाती दा दीदार पावना।
नीवाँ होके टुरया जावीं, हरदम मईया जी दा नाम को ध्यावी,
ओहदे चरणां विच्च शीस निवाले जे दाती दा दीदार पावना।
छड़दे दुनियाँ दे भेड़े चाले, जीवन करदे माँ दे हवाले,
"पूरण" शक्ती तो भूल वक्शा ले जे दाती दा दीदार पावना।

॥ भेंट ॥

मैया जग दाता दी, कहके जै माता दी तुरया जावी ।
देख पैंडे तो ना घबरावी ॥ टेक० ॥

पहले दिल अपना साफ बनालो, फिर मैया नूँ अर्ज सुनालो ।
मेरी शक्ती वन्धा, मैनूं चरण चला कहदां जावी ॥
देख पैंडे.........

औखी घाटीते पैन्डा अवल्लड़ा ओहदी श्रद्धा दा फड़ले तूँ पल्लड़ा ।
साथी रल जानगे, दुखड़े टल जानगे भेंटा गावी ॥
देख पैंडे.........

तेरा हीरा जनम अनमोला, मिलना मुड़ मुड़ न मानुष चोला ।
धोखा न खालवी, दाग न लालवी वचदा जावी ॥
देख पैंडे.........

पहला दर्शन है कौल कन्दौली, दूजी देवा ने भरनी है झोली ।
आद कंवारी नूँ जगत महतारी नूँ शिर झुकावी ॥
देख पैंडे.........

ओहदे नाम दा लैके सहारा, लंघ जायेगा पर्वत सारा ।
देखी सुन्दर गुफा "चमन" जै जैं बुला दर्शन पावी ॥
देख पैंडे.........

॥ भेंट ॥

सिर नूँ झुकालो शेराँवाली नूँ मनालो, ओोदा दर्शन पालो मिलके ।
करदी मेहर वानियाँ करदी मेहर वानियाँ ॥
गुफा के अन्दर मन्दर के अन्दर, जगदी जोत नुरानियाँ—
करदी मेहर वानियाँ ॥ सिर नूँ झुकालो.........

मैया की लीला पर्वत है नीला नीला, गरजे शेर छबीला
रंग जिसदा है पीला, रंगीला कठिन चढ़ाइया,
माँ पौड़िया लाईया ओोदियां निशानिया ओोदियां निशानियाँ ॥
सिर नूँ झुकालो.........

दाती है वरदी मेहरा सबपे है करदी, मेरी शेराँवाली दा
दुनियाँ पानी है भरदी, दुःख हरनी, अजव नजारे दाती दे द्वारे,
ऋतु मस्तानिया २ ॥ सिरनूँ झुकालो......

देवे कोढ़ी नूँ काया, निर्धन नूँ देवे माया करदी रहमत का साया
भक्तां वन के जो आया, तूँ आजा दास विचारे
माता दे द्वारे, कटे परेशानियाँ ॥ सिरनूँ झुकालो......

● ★ ●

॥ भेंट ॥

बोल जै अम्बे की माँ जगदम्बे की
सारे भक्तों मिलकर बुलवाओ ।। बोल जै अम्बे की……

जागी ज्वाला है रूप निराला दरश पावो रज-रज के,
नैइया पार लगेगी भव से तारेगी माँ क्षण में, सच्चा द्वारा है
ये जग से न्यारा है माँ के शुभ चरणों में झुक जाओ॥
बोल जै अम्बे की……

जै जै कारा ये माँ का प्यारा जो मन से बोलेगा,
जनम जनम के पाप कटेंगे सुख पाये जीवन में, मुक्ती दाता है
ये जग की माता है, मन से झूठी माया विसराओ ॥
बोल जै अम्बे की……

ध्यानूँ आया दरस माँ का पाया कि मन के पट खोले
भक्ती से इस शक्ती मां को बाँध लिया बन्धन में,
शेराँवाली को कि मेहरावाली को श्रद्धा भेंट चढ़ाकर, फल पाओ ॥
बोल जै अम्बे की……

जागो जागो रे सोने वालों ये जीवन थोड़ा है,
बीत गया तो पछताओगे रह जायेगी मन में माता आई है,
समय सुख दायी है, चुन के फूल नगीना बरसाओ ॥
बोल जै अम्बे की……

॥ भेंट ॥

माँ चरणां दे नाल मन मेरा लगा रहे ॥ टेक०
घर विच्च होय खजाना शाही,
नौकर चाकर दूध मलाई,
चाहे मन्दे हाल मन मेरा लगा रहे ॥१॥
चाहे रेशम पहन ओढ़ावा,
चाहे गुदड़ी लीरा पावा,
चाहे रूखादि छाल मन मेरा लगा रहे ॥२॥
रस भरियाँ मिठाइयाँ खावां,
छत्तिस पदारथ रसना लावां,
चाहे साग उबाल मन मेरा लगा रहे ॥३॥
राज भवन सुख महल अटारी,
माँ चरणां दे जो अधिकारी,
चाहे भये के गाल मन मेरा लगा रहे ॥४॥

॥ भेंट ॥

की की जग उत्ते आनके कमाइयाँ कीतियाँ।
वे परवाह नूँ भुला के लापरवाहिया कीतियाँ॥
किसे चंगे पासे जिन्दगी लगाई ना गई,
अन्दरों हृदय दी मैल धुलाई ना गई।
बाहरों तन दिया खूब सफाइयाँ कीतियाँ॥

निन्दा चुगली दे विच्च ये जीवन गुजारियाँ,
भला भूल के भी किसे दा कदे न सोचियाँ।
तूँ लोकांदिया रज के वुराइयाँ कीतियाँ॥
हुन भी नशा अभिमान दा सिरो उतारलै,
बांकी बचे होये जीवन नूँ अपने सवार लै।
अज तक तां तूँ अपने मन आइयाँ कीतियाँ॥

॥ भजन ४३ ॥

ले लो भक्तों की खबरिया जग जननी।
जग जननी मैया दुःख हरनी॥ ले लो……

लाल लाल माँ चोला तेरा, लालो लगी किनारी,
हम तो मैया ऐसे पूजे, जैसे सब संसारी।
नाही भुलूं तोरी डगरिया जग जननी॥ ले लो……
सिंहासन पर बैठी मैया, जिसकी शेर सवारी,
आगे पीछे लाँगू भैरो, देते पहरा मैया।
लागू तोहरी मैं चरनियाँ जग जननी ॥ ले लो……
चोआ चन्दन और अर्गजा माता अंग लगाये,
सिर सोने का छत्तर विराजे, हीरे रतन जड़ाये।
पहिरे कुशुमी चुन्दरिया जग जननी॥ ले लो……
गिरी छोहाड़ा और खोपड़ा मिट्ठे भोग लगावे,
सात सुपाड़ी ध्वजा नरैला पहली भेंट चढ़ावे।
माता तोहरी दुवरिया जग जननी॥ ले लो……

कंचन थाल कपूर की बाती चौमुख दीप सजाये,
सेवक तेरी करे आरती जैजैकार बुलाये।
मैया रहूं में शरनिया जग जननी ।। ले लो……

गुरु कन्हा तेरो यश गावे चरणों शीश झुकाई,
ओम भक्त है शरण तिहारी राखो लाज हमारी।
जै जै बोलो सब परनिया जग जननी ।। ले लो……

।। भजन ४४ विहारी ।।

नाम तोहार सगरे जपाता है काली माता ।। टेक०
जहाँ होला राउर जाप, जर जाला सारा पाप।
दरश करता फल पाता हे काली माता ।। नाम……

जाने तीन लोक नाम भजला से बने काम।
अन्त में मोक्ष मिल जाता है काली माता ।। नाम……

नर नारी धरि ध्यान करे राउर गुण गान।
नाम लेत दुःख छुट जाता हे काली माता ।। नाम……

कहत कमला दास चरण में लागल आश।
गावे गुणगान दिन राता हे काली माता ।। नाम……

● ● ●

॥ भजन ४५ विहारी ॥

काली माई के मन्दिर वा मे बाजेला बजनवाँ।

आनन्द लागेला, जहाँ होला कीरतन वाँ आनन्द लागेला निश दिन होला ऊहां होम पूजा जपवा, करत दरशमाँ क जर जाला पपवा, करत पुजनवां माँ कहो खेला भजनवाँ वुलन्द लागेला जहाँ होला कीर्तनवाँ आनन्द लागेला ॥ काली माई……

खण्ड्ग खप्पड़ करमे गले मुण्ड मलवा, मेवा मिष्ठान चढ़े और नारियलवा, धरिके धियनवाँ करसमाँ क अरचनवाँ आनन्द लागैला जहाँ होला कीर्तनवाँ आनन्द लागेला ॥ काली माई……

तुहूँ दयालू मईया राखा मोर लजवा, तोहरा ऊपर बाड़े सबके मिजनवा, होत अर्चनवाँ माता तोहरो भवनवाँ सुगन्ध लागेला जहाँ होला कीर्तनवाँ आनन्द लागेला ॥ काली माई……

॥ भजन ४६ विहारी ॥

सफल बनावे जिन्दगनियाँ भजनियाँ भैया ॥ टेक० ॥
मैया जी के ध्यान धरी, भजले तूँ आध घरी।
बरबस दीहे दरशनियाँ भजनियाँ भैया ॥ सफल०॥
आई जब काल घेरी, लौकी तोहे ताही बेरी।
तड़प-तड़प रोई परनियाँ, भजनियाँ भैया ॥ सफल० ॥
आपन होय चाहे पराई, लेकिनसंग में कोई नजाई।
आखिर आवे काम कीर्त्तनियाँ, भजनियाँ भैया ॥ सफल० ॥
माया में भुलैला आके, काही तूँ बतैबा जाके।
तुमसे पुछाई जब बयनियाँ, भजनियां भैया ॥ सफल० ॥
उठाई तोहे चारो कहरा, फूँक दीहे गाँव के बहरा।
जारि दीहे होली के समनियाँ, भजनियाँ भैया ॥ सफल० ॥
अपना धरम के सिवा साथ कछू न जाये।
जाये न गजभर कफनियाँ, भजनियाँ भैया ॥ सफल० ॥
देखी कुदरत की रीती, मनवाँ अभी से चेती।
चरण में लगा ला अब लगनियां, भजनियाँ भैया ॥ सफल० ॥
कहत कमला गाई अबहूं से चेता माई।
लेई के गुरुजी से गियनियाँ, भजनियाँ भैया ॥ सफल० ॥

॥ भजन ४७ ॥

अम्बा भजो जगदम्बा की जैजै ॥ टे० ॥

दुर्गा की जैजै काली की जैजै, सिद्धा जया सरस्वती की जैजै
विमला की जैजै राधा की जैजै, तारा ऊमा भगवती की जैजै

चंड्डी की जैजै वगला की जैजै, लक्ष्मीरमा मातंगी की जैजै
पद्मा की जैजै इन्द्राणी की जैजै, त्रिपुरा कावेरी वैष्णवी की जैजै

बाला की जैजै कमला की जैजं, कृष्णा शिवा पार्वती की जैजै
ललिता की जैजै विजया की जैजै, विद्या ब्रह्माणी गायत्री की जैज

भुवना की जैजै भद्रा की जैजै, श्री संकटा रुद्राणी की जैजै
भीमा की जैजै धूमा की जैजै, काशी भैरवी ईशानी की जैजै

गिरिजा की जैजै विरजा की जैजै, विंध्याभवानीकल्याणी की जैजै
गीता की जैजै गौरी की जैजै, मृडानी भुवानी वाकदानी की जैजै

गंगा की जैजै यमुना की जैजै, सीता सती त्रिवेणी की जैजै।
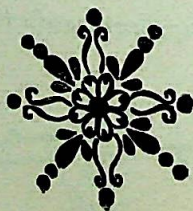
॥ भजन ४८ ॥

तर्ज—फकीरा

चलो चलो मइया के द्वार चलो।
जहाँ मइया दरबार, आते भक्त अपार।
इनके मन्दिर की शोभा देखो देखो दिन रात, मइया दरबार।

(१)

मइया माथे मुकुट विराजे गले पुष्पों की माला,
बैठी है वो सिंह सवारी हाथों में है माला,
बोलो सब जैजै कार, इनकी महिमा अपार,
मइया दरबार, चलो चलो मइया के द्वार चलो।

(२)

तूँ है अम्बे तूँ जगदम्बे तूँ है दुर्गा काली,
रूप अनेको हैं माँ तेरे तूँ है पर्वत वाली,
आवे संकट अपार, कर दो मेरा उद्धार,
मइया दरबार, चलो चलो मइया के द्वार चलो।

(३)

दास तुम्हारे हे जगजननी तेरा ही गुण गाते हैं,
आकर तेरे दर पै मइया अपना दर्द सुनाते हैं,
तेरी महिमा अपार आया हूँ तेरे द्वार,
मइया दरबार, चलो चलो मइया के द्वार चलो।

॥ भजन ४६ ॥

जै कारा बोलो प्रेम से माँ मेरी आती है।
सच्चे दिल से माँ को पुकारो बिगड़ी बनाती है॥

(१)

जो भी माँ के दर पर आवे अपना, दु:खड़ा माँ को सुनावे।
माँ आके शेर सवारी कष्ट मिटाती है॥

(२)

जागे में जो माँ के आता, चरणों में जो भेंट चढ़ाता।
मां करती इच्छा पूरी सुख बरसाती है॥

(३)

तन मन धन से माँ का पूजन, श्री कान्त दुर्गा का कीर्त्तन।
जहाँ होवे वहाँ माँ सबको दरश दिखाती है॥

॥ भजन ५० ॥

मैया की लीला निराली, भरती है झोली ये खाली।
दर पर माँ के जो भी आया, मुँह मांगा फल उसने पाया
दर से जाये न कोई खाली॥ भरती है० ॥
बड़े बड़े पापी को तारा, जग में मैया नाम तुम्हारा
भक्तों की है रखवाली॥ भरती है० ॥
तेरी ज्योति से जग उजियारा, जगजननी है नाम तुम्हारा
माँ तू ही है जोता वाली॥ भरती है० ॥
श्री कान्त दुर्गा का कीर्त्तन, करता है जो प्रेम से निशदिन
उसे देती है दरशन काली॥ भरती है० ॥

॥ सवैया ॥

बृजराज से नाता जुड़ा जब है तब जग की क्या परवाह करें।
बस याद में रोते रहे उनकी, पलकों पै अश्रु प्रवाह करें।
जितनी वे दूर रहें हम सों उतनी हम उनकी चाह करें।
सुख अद्भुत प्रेम की पीर में है हम आह करें वे वाह करें॥

॥ भजन ५१ ॥

दया की नजर हो सदा कमली वाले,
यही है मनोकामना कमली वाले॥

किनारा है यमुना का आँखें ये मेरी,
इन्हीं पै तूँ गौयें चरा कमली वाले॥

हृदय धाम मेरा है ब्रज धाम तेरा,
यहाँ नित्य बंशी बजा कमली वाले॥

चुराना ही मंजूर है तुमको माखन,
तो इस मन का माखन चुरा कमली वाले॥

तुझी को मैं देखूँ तेरा गुण ही गाऊँ,
यही धन हो मुझको जता कमली वाले॥

॥ कवित्त ॥

मौज गरबीला हूँ रंगिला रंग श्याम का हूँ,
कहिं कहिं हेकड़ी हठिला बदनाम हूँ।
प्रेम की कहानियों का अटल उपासक हूँ,
मूढ़ अभिमानियों से रखता न काम हूँ।
नेह नगरी में "विन्दू" घूमता सुबह श्याम,
हरी सेवकों के लिए सरस कलाम हूँ।
आशिक हूँ मदन मुरारी गिरधारीजी का,
प्यारी वृष भानु की दुलारी का गुलाम हूँ।

॥ भजन ५२ ॥

अनूपम माधुरी जोड़ी हमारे श्याम-श्यामा की।
रशिली मदभरी अंखियाँ हमारे श्याम-श्यामा की॥
कटिली भौं अदाँ बाकी सुघर सूरत अजब बतियाँ।
लटक गर्दन की मन बसियाँ हमारे श्याम-श्यामा की॥
मुकुट और चन्द्रिका माथे अधर पर पान की लाली।
अहो कैसी बनी छबि है हमारे श्याम-श्यामा की॥
परस्पर मिल के जब विहरं वो बृन्दावन की कुंजों में।
नहीं वर्णन बने शोभा हमारे श्याम-श्यामा की॥
नहीं कुछ लालसा धन की नहीं निर्वाण की इच्छा।
सखी श्यामा को दे दर्शन दया हो श्याम-श्यामा की॥

॥ सवैया ॥

पावन पाय सुहोत तवै, जब पायन ही कछु तीरथ कीजै।
पाप विहीन तबै कर होत, जवै कछु दान दुहू भरि दीजै॥
नैनन को तब ही फल है, जब संतन को पद-कंज लखी जै।
अन्तहु शुद्ध सुहोत तबै जब, माधो मुकुन्द गोविन्द भजीजै॥

॥ भजन ५३ ॥

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेवा।

(१)

ओ प्राण मेरे यही चाहता हूँ, सुख शान्ति सन्तोष प्रसन्नता हो।
तो प्रेम पूर्वक गाये चला जा, श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे॥

(२)

विषयों विकारोंमें न डूब जाना, सुख शान्ति इसमें कभी न मिलेगी।
मिलती उसे शान्ति जो नित्य गाता, श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे॥

(३)

जिनके लिए कष्ट उठा रहा है, अन्तिम समय साथ न कोई देगा।
आधार सच्चा हरी नाम केवल, श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे॥

(४)

तृष्णा कभी शान्त हुई नहीं है, ये वासनायें ना बुझ सकेंगी।
अभी समय है कुछ देर गाले, श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे॥

(५)

गाना अगर है हरी नाम को गा, जाना अगर है बृजधाम को जा।
पाना अगर है हरी नाम को पा, श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे॥

(६)

माया रंगिली रंग ला रही है, मनको हमारे भरमा रही है।
जीवन सफल कर यही मन्त्र गाकर, श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे॥

॥ भजन ५४ ॥

कृपा की कोर अब कर दीजिये घनश्याम थोड़ा सा।
हृदय में शक्ति को भर दीजिये घनश्याम थोड़ा सा॥

तुम्हें पाने को अब तक दर ब दर हम खूब घूमे हैं।
दिखा अब राह सीधी दीजिये घनश्याम थोड़ा सा॥

ये सच है आज तक हमने न पहचाना है खुद को ही।
मगर फिर भी मेहर कर दीजिये घनश्याम थोड़ा सा॥

प्रबल अरि मोह माया क्रोध कामादिक से लड़ने को।
हमें अब शक्ति अपनी दीजिये निष्काम थोड़ा सा॥

शरण में आ पड़ा केशव ये जाये तो कहाँ जाये।
मुझे अपनी शरण अब दीजिये घनश्याम थोड़ा सा॥

॥ शेर ॥

मैंने अशरण शरण सुने जब से, मैं तेरी शरण में आया हूँ।
करुणेश करो करुणा इस पर, मैं करुणा पात्र तुम्हारा हूँ॥
मैं हार गया मतिमन्द भाग्य, अब भाग्य बनाने आया हूँ।
तुम जान अयोग्य विसारो ना, मैं व्यथा सुनाने आया हूँ॥

॥ सवैया ॥

जिनके हिय में घनश्याम बसे, तिन ध्यान महान कियो न कियो
वृन्दावन धाम कियो जिनने, तिन और को धाम कियो न कियो
जमुना जलपान कियो जिनने, तिन अमृत पान कियो न कियो
श्रीकृष्ण का नाम लियो जिनने, तिन और को नाम लियो न लियो

॥ प्रार्थना ॥

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो जीवन निरर्थक जाने न पाये।
यह मन न जाने क्या क्या दिखाये कुछ बन न पाया मेरे बनाये॥
संसार में ही आशक्त रहकर दिन रात अपने मतलब की कहकर।
सुख के लिये लाखों दुःख सहकर ये दिन अभी तक यों ही बिताये॥
ऐसा जगा दो फिर सो न जाऊँ, अपने को निष्काम प्रेमी बनाऊँ।
मैं आपको चाहूँ और पाऊँ, संसार का कुछ भय रह न जाये॥
वह योग्यता दो सत्कर्म कर लूँ, अपने हृदय में सद्भाव भर लूँ।
नर तन है साधन भव सिन्धु तर लूँ ऐसा समय फिर आये न आये॥
हे प्रभु हमें निराभिमानी बना दो, दारिद्र हरलो दानी बना दो।
आनन्दमय विज्ञानी बना दो, मैं हूँ पथिक यह आशा लगाये॥

॥ शेर ॥

आया कर कान्ह इन्हीं गैलन में रूमझूम ,
साँझ औ सकारे कभी दर्श तो दिखाया कर ॥
'कादर' कह छाया कर नैनन के बीच सदा ,
रूखा सूखा थार हम गरीबों का खायाकर ॥
खाया कर माखन मलाई खूब लूट लूट ,
लहजा अनोखी तान बाँसुरी बजायाकर ॥
जायाकर जमुना के कच्छन कछार पार ,
हाव भाव हूँ सो मेरे हिय में समायाकर ॥

॥ प्रार्थना ॥

मेरे घनश्याम तुझे द्वारका आना होगा ।
अपनी तो कर चुके अब कौल निभाना होगा ॥
अंखियाँ प्यासी हैं दरश की ये मेरे मन मोहन ।
बहुत हम सह चुके मेवाड़ से आना होगा ॥
ग्वाले व्याकुल हैं तड़पती हैं गोपिया वृज की ।
उसी वृज-भूमि में फिर रास रचाना होगा ॥
क्या खता मेरी हुई ये तो बता दो भगवन ।
आप ना आये तो खुद मुझको ही आना होगा ॥
पंछी रोते हैं विलखती हैं गाय गोकुल की ।
मुरली वाले तुम्हें कुछ त्याग दिखाना होगा ॥
भक्त वत्सल तेरे आने की गिन रहे घड़ियाँ ।
तुम्हें भोला की प्रभो बिगड़ी बनाना होगा ॥

॥ शेर ॥

नहिं ब्रह्म सो काज कछू हमको, वैकुंठ की राह न जावनि है।
वृज की रज में रज ह्वै के मिलूं, यहि प्रीति की रीति निभावनि है॥
वल वल्लभ गाय चराया करूँ, ऐसे ग्वालन की गोहरावनि है।
नन नन्द की देहरी पै घिस के, हम कर्म को रेखा मिटावनि है॥

॥ भजन ५५ ॥

हमें हे कृष्ण हे केशव तुम्हारा ही सहारा है।
न तुमको छोड़कर संसार में कोई हमारा है॥
पड़े जब भीर भक्तों पर तभी तुम दौड़ पड़ते हो।
सुना है भक्त से सबसे बड़ा नाता तुम्हारा है॥
कभी तुम राम बनते हो, कभी घनश्याम बनते हो।
गिनाऊँ क्या कि कितनी वार भक्तों को उबारा है॥
नहीं लौटा तुम्हारे द्वार से कोई कभी खाली।
कहो भगवन हमारे वास्ते अब क्या विचारा है॥
बताया है हमें हे देव देव! 'दिनेश' तुमने ही।
कि अपने भक्त को मैं भक्त मुझ को प्राण प्यारा है॥

—म० दीनानाथ दिनेश कृत दैनिक प्रार्थना से साभार

● ★ ●

॥ शेर ॥

मुख सूख गया यदि रोते हुए, फिर अमृत ही बरसाया तो क्या।
भव सिन्धु अपार में डूब गए, तब नाविक नाव को लाया तो क्या॥
युग लोचन बन्द हमारे हुए, तब निष्ठुर तूँ मुस्काया तो क्या।
जब जीवन ही तन में न रहा, तब आकर दर्श दिखाया तो क्या॥

॥ भजन ५६ ॥

कर में मुरली लिये, कांधे कामर दिये तापहारी,
आओ कलयुग में बाँके बिहारी॥

मोर पंखों की क्या ही छटा है,
संग मोती मणी के सटा है।
सर मुकुट राजता देख,
मन मोहता वृज बिहारी॥ आओ०॥

पद्म से दोनों नैना सुहाते,
सुख के आगार कवी हैं बताते।
ओठ अरु गाल है,
पद्म से लाल है माल धारी॥ आओ०॥

कर में मुरली को जिस दम उठाकर,
अपने ओठों से उसको लगाकर।
तुम बजाते जभी,
मोह जाते सभी मुरली धारी॥ आओ०॥

पग को पग से फंणीसा सटाकर,
हाथ राधे के कंधे पै धर कर।
कर त्रिभंगी नज़र,
मीठी मुस्कान कर नृत्य कारी ॥ आओ० ॥

धूम कलियुग ने अपनी मचाई,
पाप पुण्यों की होती लड़ाई।
राम सुन के विनय,
आओ कर दो विजय हे हमारी ॥ आओ० ॥

॥ दोहा ॥

राधे मेरी स्वामिनी मैं राधे को दास,
जन्म २ मोहे दीजियो श्री वृन्दावन वास।
राधे अति ही लाड़िली मेरी ओर कूं देख,
मैं तोये राखू नैन में काजल केरी - रेख।
वृन्दावन वानक बनो भंवर करत गुंजार,
दुलहिन प्यारी राधिका औ दुल्लह नंदकुमार।
वृन्दावन में प्रेम की नदी बहै चहु ओर,
याही रस में हो मगन नहिं जाने निशि भोर।
वृन्दावन में वास करि साग पात नित खात,
तिनके भागन को निरखि ब्रह्मादिक ललचात।

● ● ●

॥ भजन ५७ ॥

मोरे जीवन को सहारो राधा रानी के चरण ।
राधारानी के चरण महरानी के चरण ॥ मोरे० ॥
श्री बरसानो गाँव है जिनको वृन्दावन राजधानी ।
शिषरन ऊपर महल बिराजे तीन लोक से न्यारो ॥ मोरे० ॥
चित्त चोरहु की चित्त हारिणी श्री राधे महरानी ।
दर्शन कारण कुंजन कुंजन डोलत श्याम विचारो ॥ मोरे० ॥
रासेश्वरी सखियन संग आवत श्याम करत अगवानी ।
डगर बुहारत कृपा मनावत जग को सिरजन हारो ॥ मोरे० ॥
भोरे नयनों सो रस छलकत बोलत मधुरी वानी ।
अधरन की मुस्कान मधुर लख होत पिया मतवारो ॥ मोरे० ॥
बड़ रखवाल हमारी स्वामिनी श्री राधे महरानी ।
जिन चरणन की रज चाहत नित कमला को घरवारो ॥ मोरे० ॥
उपजत जासु अंश से अंगणित उमा रमा ब्रह्माणी ।
सकल सृष्टि जाके बल से नित करत चार मुखवारो ॥ मोरे० ॥
पायन परि परि जिन्हें मनावत तीन लोक को स्वामी ।
वाके चरण तले राजों को आँख दिखावन हारो ॥
मोरे जीवन को सहारो राधा रानी के चरण ।
राधारानी के चरण महरानी के चरण ॥

॥ सवैया ॥

वृन्दावन धाम को वास भलो जहाँ पास बहे जमुना पटरानी ,
जो जन न्हाय के ध्यान धरे बैकुंठ मिले तिनको राजधानी ।
चारहु वेद पुराण मुनीन गुनीन जनीन कहे मनमानी ,
जमुना जम दूतन्ह टारत है भव तारत है श्री राधिका रानी ॥

॥ भजन ५८ ॥

लगालो श्याम चरणों में जमाने का सताया हूँ ।
मैं दिल की दास्तां सारी सुनाने दर पै आया हूँ ॥
दिया था जन्म जब तुमने खुशी सबने मनाई थी ।
करी हर आरजू पूरी दया तेरी हो पाई थी ।
सम्हलती अब नहीं बिगड़ी बड़ी गर्दिश में आया हूँ ॥
यहाँ अपने व गैरों का बुरा दस्तूर देखा है ।
बिगड़ती में सदा अपनों को ही मजबूर देखा है ।
यहाँ कोई नहीं अपना मैं मुफलिश बन के आया हूँ ॥
मैं रो रो पाप की गठरी रखी है सामने तेरे ।
रहमकर आज मुश्किल में हटा उलझन के सब फेरे ।
मुरादां मांगने शर्मा तेरे दरबार आया हूँ ॥

॥ भजन ५९ ॥

दर्शन दो घनश्याम नाथ मोरी अँखियाँ प्यासी रे।
मन मन्दिर की ज्योति जगा दो घट-घट वासी रे ॥ दर्शन० ॥
मन्दिर मन्दिर मूरत तेरी, फिर भी न दीखे सूरत तेरी।
युग बीते न आई मिलन की पूरनमासी रे ॥ दर्शन० ॥
द्वार दया का जब तू खोले, पंचम सुर में गूँगा बोले।
अंधा देखे, लंगड़ा चलकर पहुँचे काशी रे ॥ दर्शन० ॥
पानी पीकर प्यास बुझाऊँ, नयनन को कैसे समझाऊँ।
आँख मिचोली छोड़ो अब तो मन के वासी रे ॥ दर्शन० ॥

॥ भजन ६० ॥

गोविन्द तुम्हीं गोपाल तुम्हीं घनश्याम यशोदा नन्दन हो।
हे नाथ कहीं योगेश्वर हो हे नाथ कहीं मन मोहन हो ॥
तुम आदि अनादि हो भगवन तुम छैल छबीले पुरुषोत्तम।
विस्तार तुम्हारी माया का क्या मुरली मनोहर वर्णन हो ॥
आकाश में शब्द बने नटवर ओंकार बने तुम वेदों के।
ज्योति हो सूरज चाँद में तुम संसार का जीवन कारण हो ॥
गौवों के कष्ट निवारण को अब लीला है तुमने ही रची।
कलियुग के नाशक नाथ तुम्हीं, तुम ही सतयुग संचारक हो ॥
भूमि का भार हरण करने प्रभु निष्कलंक बन आये हो।
कल्कि मंडल के प्राण तुम्हीं स्वीकृत मेरा अभिनन्दन हो ॥

॥ प्रार्थना ॥

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में॥
मेरा निश्चय बस एक यही इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ दुनियाँ भर का सब प्यार तुम्हारे हाथों में॥
जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ ज्यों जल में कमल का फूल रहे।
मेरे सब गुण दोष समर्पित हो गोपाल तुम्हारे हाथों में॥
यदि मानुष का मुझे जन्म मिले तो तव चरणों का पुजारी बनूँ।
इस पूजक की इक इक रग का हो तार तुम्हारे हाथों में॥
जब जब संसार का कैदी बनूँ निष्काम भाव से कर्म करूँ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ साकार तुम्हारे हाथों में॥
मुझ में तुझ में बस भेद यही मैं नर हूँ तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसार के हाथों में संसार तुम्हारे हाथों में॥
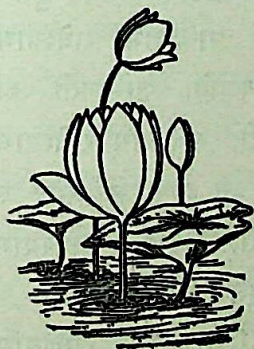
॥ श्री कृष्ण कीर्तन ॥

श्री बल्लभ-जन-मनहारी राधेश्याम राधेश्याम।
वृन्दावन कुंज विहारी, राधेश्याम राधेश्याम॥
मोर पंख तन श्याम मनोहर पीताम्बर लख मोहे सुर नर।
कमल-नयन बलिहारी, राधेश्याम राधेश्याम॥
पृथ्वीभार उतारन हारे, यशुमती माँ के परम दुलारे।
वंशी करतल धारी, राधेश्याम राधेश्याम॥
कारावास जन्म प्रभु लीन्हा, वृज वासिन्ह कहं अति सुख दीन्हा।
देख थके त्रिपुरारी, राधेश्याम राधेश्याम॥
यमलार्जुन जड़योनि छुड़ाई, माँ सहमी जब माटी खाई।
मुख त्रैलोक्य निहारी, राधेश्याम राधेश्याम॥
यमुना तट नित धेनु चराई, कालीनाग नाथ्यो वरियाई।
माखन चोर मुरारी, राधेश्याम राधेश्याम॥
गीरी गोबर्द्धन सहज उठायो, गोपिन सुख हित रास रचायो।
कंशादिक संहारी, राधेश्याम राधेश्याम॥
राधा के सर्वस्व कहाये, जाम्बवती रुक्मिणीमन भावे।
सतभामादिक प्यारी, राधेश्याम राधेश्याम॥
होरी की वृज में बन आई, सुर मोहे लख पञ्चाध्यायी।
राधाहित लिलहारी, राधेश्याम राधेश्याम॥
मधुर सुदामा तन्दुल लागे, दुर्योधन घर मेवा त्यागे।
विदुर साग स्वीकारी, राधेश्याम राधेश्याम॥

गीता को उपदेश सुनायो, कौरवादि अभिमान नसायो।
चीर बढ़ावनहारी, राधेश्याम राधेश्याम॥
भीष्म प्रतिज्ञा राख कन्हाई, अपनी टेक आप ठुकराई।
भारत युद्ध मझारी, राधेश्याम राधेश्याम॥
मोर ध्वज को धर्म बचायो, पाण्डवादि की यज्ञ करायो।
चक्र सुदर्शन धारी, राधेश्याम राधेश्याम॥
श्री वल्लभ विट्ठल अवतारी, पुष्टि मार्ग-दर्शक आचारी।
शुद्धा द्वैत प्रचारी, राधेश्याम राधेश्याम॥
वैष्णव जननित यह गुण गावे, प्रभु सम्बन्धी अष्टाक्षर ध्यावे।
सुख पावे अतिभारी, राधेश्याम राधेश्याम॥
प्रभू की कृपा कोर पा जाते, यही हृदय में भूप मनाते।
जै श्रीकृष्ण पुकारी, राधेश्याम राधेश्याम॥

॥ भजन ६१ ॥

गरीबों पर नज़र अपनी उठायेंगे मदन मोहन।
हमारे धर्म गौरव को बढ़ायेंगे मदन मोहन॥
सँभल जाये गरीबों पर जो अत्याचर करते हैं।
उन्हीं के खून का बदला चुकायेंगे मदन मोहन॥
सतावोगे गरीबों को समझ लो सोच लो मन में।
सुदर्शन चक्र का चक्कर चलायेंगे मदन मोहन॥
तड़पती आह पहुँचेगी, प्रभू के पास परदेशी।
तो बेचैनी से नंगे पाव धायेंगे मदन मोहन॥

॥ भजन ६२ ॥

प्रबल प्रेम के पाले पड़कर प्रभू को नियम बदलते देखा।
उनका मान टले टल जाये जन का मान न टलते देखा॥
जिसकी केवल कृपा दृष्टि से सकल सृष्टि को पलते देखा।
उनको गोकुल के गोरस पर सौ सौ बार मचलते देखा॥
जिनके चरण कमल कमला के करतल से न निकलते देखा।
उनको बृज करील कुन्जों में कंटक पथ पर चलते देखा॥
जिनका ध्यान विरंची शम्भु सनकादिक से न संभलते देखा।
उनको ग्वाल सखा मंडल से लेकर गेंद उछलते देखा॥
जिनकी बंक भृकुटी के भय से सागर सप्त उबलते देखा।
उनको ही यशुदा के भय से अश्रु विन्दु से ढलते देखा॥

॥ प्रार्थना ॥

दामन छुड़ा के जाते हो क्या फिर न मिलोगे।
जो सब की सुन रहे हो तो मेरी न सुनोगे॥
उद्धार पापियों का प्रभु तुमने किया है।
गणना उन्हीं में नाथ क्या मेरी न करोगे॥
भारत की दशा देखकर गोपाल पधारो।
ऊजड़ा वतन तुम्हारा है आबाद करोगे॥
हैं लाखों द्रोपदी यहाँ अनगिनत सुदामा।
लीला गजेन्द्र मोक्ष की क्या फिर न करोगे॥
श्री कान्त भटकता है प्रभु द्वार पै कबसे।
अपना ही समझ कर उसे भव पार करोगे॥

॥ भजन ६३ ॥

हे कृष्ण तुम्हारी उल्फत में, गुलजार भी है और खार भी है।
क्या लुफ्त है प्रेम निराले में, जहाँ मार भी है और प्यार भी है॥
इक हाथ में प्रेम भरी बंशी, इक हाथ में चक्र सुदर्शन है।
हम तो समझे इन चालों से, इन्कार भी है इकरार भी है॥
हरिणाकुश ने जब जुल्म किया, प्रह्लाद ने नाम था तेरा लिया।
जिस वख्त लगाया खम्भे से, कहा दार भी है दीदार भी है॥
डयोढ़ी पर चौकीदारों ने, रोका तो सुदामा यों बोले।
मैं तो उस कृष्ण का प्रेमी हूँ, मेरा यार भी है सरकार भी है॥
वो चाहे मान बढ़ा देवे, वो चाहे पल में गिरा देवे।
है सारे जग का खुद वो चमन, निराकार भी है साकार भी है॥

॥ भजन ६४ ॥

रटुंगा सदा मैं कन्हैया कन्हैया।
जो कर दे दया तूं हमारे कन्हैया॥
न मुझसे जुदा तूं न तुझसे जुदा मैं।
तूं मेरा कन्हैया मैं तेरा कन्हैया॥
जरा सी जो अपनी कृपा की निगाहे।
घुमा देते हम पर हमारे कन्हैया॥
तो मुश्किल हमारे सुगम सब दिखाते।
सुधर जाते जीवन हमारे कन्हैया॥

अघहारी दयालु अघी दीन पें नेक।
करुणा की दृष्टि जो करते कन्हैया॥
तो तुम्हारा बिगड़ता कहो क्या दयालु।
सुधरता हमारा सभी कुछ कन्हैया॥
मुसीबत का मारा करम का पछाड़ा।
हूँ माया का मैं तो सताया कन्हैया॥
इसी से तुम्हारे ही दर पें हूँ आया।
नहीं कोई जग में सहारा कन्हैया॥
ये माया औ कर्मों के बन्धन में केशव।
भुलाओ न हमको हमारे कन्हैया॥
जो कर्मों के बन्धन में हम यों रहेंगे।
तो तुम फिर दवा किस मरज के कन्हैया॥
हमारी ही गल्ती सभी कुछ है माना।
जगत के पिता फिर बने क्यों कन्हैया॥
बने जब पिता इस जगत के विधाता।
तो सन्तति को अपने सँभालो कन्हैया॥
मैं अच्छा बुरा चाहे जैसा भी जो हूँ।
तुम्हारे ही चरणों में अर्पण कन्हैया॥
मैं जैसा हूँ वैसा ही तेरा हूँ स्वामी।
कहाऊँगा तुम्हारा ही सेवक कन्हैया॥

● ★ ●

॥ भक्त की सच्ची भावना ॥

इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकले।
गोविन्द नाम लेकर, फिर प्राण तन से निकले ॥
श्री गंगाजी का तट हो, या यमुना जी का वट हो।
मेरा सावला निकट हो, जब प्राण तन से निकले ॥
श्री बृन्दावन का थल हो, मेरे मुख में तुलसी दल हो।
विष्णु-चरण का जल हो, जब प्राण तन से निकले ॥
वह सावला खड़ा हो, बंशी का स्वर भरा हो।
तिरछा चरण धरा हो, जब प्राण तन से निकले ॥
सिर सोहता मुकुट हो, मुखड़े पै काली लट हो।
यही ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तन से निकले ॥
जब प्राण कंठ आवे, कोई रोग न सतावे।
यम दर्श ना दिखावे, जब प्राण तन से निकले ॥
मेरा प्राण निकले मुख से, तेरा नाम निकले मुख से।
बच जाऊँ घोर दुःख से, जब प्राण तन से निकले ॥
उस वक्त जल्द आना, नहीं श्याम भूल जाना।
बंशी की धुन सुनाना, जब प्राण तन से निकले ॥

॥ भजन ६५ ॥

तुम्हारे सहारे ये जीवन है मेरा,
मेरे नाथ देते सहारा ही रहना।
हृदय में छबी जो बसी है मनोहर,
तो मनहर हृदय में बसाए ही रहना॥

मधुर तान बंशी सुने कान मेरे,
मधुर श्याम श्यामा लखे आँख मेरी।
जिह्वा मधुर तान राधा उचारे,
तन मन से सेवा निभाते ही रहना॥

रस राज रस सार आनन्द सागर,
बिहारी बिहारिन भरो प्रेम गागर।
प्रेमा स्वरूपा अनूपा अनन्या,
भक्ती हमेशा बढ़ाते ही रहना॥

बृज रज मिले बृन्दावन धाम प्यारा,
बरसाना गोकुल गोबर्द्धन स्मन हो।
चादर फटे तन की जब हो पुरानी,

चटक प्रेम रंग भी चढ़ाते ही रहना॥
श्री बाँके बिहारी बाँकी अदा से,
श्री राधा के संग बसो मेरे मन में।
ये जीवन मरण हो तुम्हारे चरण में,
राधा रमन चित चुराते ही रहना॥

॥ भक्त विदुरानी ॥

कब कैसे वो कृष्ण कन्हैया विदुरानी के घर आये।
वही कथा संवाद सुनाने भक्त गणों हैं हम आये॥
मन चित्त देकर सुनने से आनन्द ज्ञान कुछ पायेंगे।
गप शप करते चंचल मन से खाली पल्ले जायेंगे॥
इसीलिए मैं करता बिनती मन चित्त देकर सुन लीजै।
इधर उधर के छोड़ ध्यान को ध्यान इधर अब कर दीजै॥
पहिले सुनिये पीछे कहिये अहंकार को तज दीजै।
पर निन्दा को छोड़ सत्य पथ मारग सीधा धर लीजै॥
राधा माधव गोविन्द केशव सभी सभासद कह लीजै।
मीठे मीठे धीरे धीरे प्रेम सुधा रस पी लीजै॥

॥ भजन ६६ ॥

एक बेर द्वारका से चले यदुराई अरु,
आई गये विदुर के द्वारे भक्त जानिके।
विदुर जी गृह काज बाहर गये थे कहुँ,
विदुरानी घर रही हरी गुण गाइके॥
टेर सुनि यदुराई धाई अकुलाई अरु,
प्रेम में विभोर सुधि तन की विसारि के।
देखि वस्त्र हीन तन, पीत पट फेंक्यो हरी,
तब संकुचाई लेई गई पधराई के॥

॥ प्रेम विभोर ॥

(१)

श्याम सुन्दर पधारे हैं विदुर अँगना ॥ टेक ॥
भोग छप्पन सुयोधन का त्यागि आये हैं,
प्रेम भक्ती भाव विदुर के देखि आये हैं।
भूखे भाव के कन्हैया गये विदुर अँगना,
आये बनवारी घर में विदुर नहीं थे।
गिरधारी द्वारे विदुर को टेर रहे थे,
विदुरानी घर स्नान कर रही ना।
टेर सुनि विदुरानी श्याम सुन्दर की ज्यों,
धाई अकुलाई वस्त्र ते विहीन तन त्यों।
देखि वस्त्र हीन हरी पीत पट फेक्यों ना,
तन ढाकि पीत पट सकुचाई बोली यों।
आओ श्याम सुन्दर पधारे कहाँ सों,
पधराई पग धोई जलपान कियो ना।
अशन बिछाई विठलाई हरि बैठे तब,
छेम पूछि पूछे हरि कहाँ है विदुर जी।
गये कहुँ अभी आये कहि ताके इतउत,
आज कुछ भोग नाहीं हरी हित घर जी।
देखि परयो कदली के फल कछु ताख माही,
धरि के प्रसन्न लाई हरि हित फल जी।

प्रेम मतवारी फल छिली छिली फेकि फल,
छिलका ही देने लगी हरि जी के कर जी।

(२)

प्रेम के तो भूखे हरि देखि प्रेम विदुरानी,
प्रेम से जो खाने लगे छिलका ही हरी जी।
आई गये विदुर और देखि के ये रंग ढंग,
बोले यह नारी मुई बावरी हरी जी।
कहि ऐसो वैन फल छिनी बिदुरानी हाथ,
छिली फेक्यो छिलका खिलाने लगे फल जी।
खाई बोले हरि स्वाद छिलका में रह्यो जैसो,
वैसो स्वाद फल माहि नाही हो विदुर जी।
कर जोरि विदुर जी बोले वैन हरि जूं सों,
ऐसो प्रेम तुम बिन करै कौन हरि जी।
भिलनी विभिषण सुग्रीव औ अजामिल सों,
घर घर में कौन जाई तारे मेरे हरि जी।
एहि ते कहत हम सेवक निहोरा करि,
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कहु सब कोई जी।
एहि नाम लिए भव ताप सब दूर होत,
प्रेम देखि आवे हरि करै नहिं देरी जी।

॥ आवाहन (हृदय के कुंज में आवो) ॥

कन्हैया ! आवो, मिल जावो, तुम्हें माखन खिलाऊँगा।
दही और दूध की अमृत-मयी नदियाँ बहाऊँगा ॥
हृदय के कुंज में छोटा सा, बृन्दावन बसाऊँगा।
मैं अपने आँसुओं से प्रेम की यमुना बहाऊँगा ॥
तुम्हारे पाद-पथ में मैं, नयन पलकें बिछाऊँगा।
अटल श्रद्धा के कुसुमों से, सुमन-शैय्या सजाऊँगा ॥
सेवा में गोपियाँ-चेरी, मेरी शुभ-कामना तेरी।
चपल-मन मन सुखा तेरा, दास पंखा डुलाऊँगा ॥
कभी तुम काम क्रोध अरु मोह-असुरों का दमन करना।
कभी मैं रास प्रेमालाप का नूतन रचाऊँगा ॥
रहूँगा जिस तरह रखो - खाऊँगा जो भी कुछ दे दो।
चरण - सेवा में आठोंयाम, तन मन धन लगाऊँगा ॥
करूँगा मैं वही स्वामी ! जो आज्ञा मुझको दे दोगे।
इशारे पर प्रभो ! अम्बर के तारे तोड़ लाऊँगा ॥
पसीने पर तुम्हारे प्राण में अपने लगा दूँगा।
तुम्हारा नाम ले - लेकर, तुम्हीं में मैं समाऊँगा ॥
बस आ जाओ ! हा ! अब ज्यादा न तरसाओ मदन मोहन।
गले मिलकर दिले - दर्दों को रोऊँगा सुनाऊँगा ॥
बहुत गोपाल वेकल हूँ, बँधाओ धीर गिरधारी।
मेरी बिगड़ी बना जावो, तेरी जय जय ! मनाऊँगा ॥

॥ भजन ६७ ॥

भक्त बनता हूँ मगर हूँ अधमों का सरताज भी।
देख कर पाखंड मेरा हँस पड़े ब्रज राज भी ॥
कौन मुझसे बढ़ के पापी होगा इस संसार में।
सुन के पापों की कहानी डर गये यमराज भी ॥
दीन होकर क्यों कहें सरताज तुम तारो हमें।
वो पतित पावन स्वयं रखेंगे अपनी लाज भी ॥
दृग के बिन्दू दिल हिलादे क्यों ना दीना नाथ का।
दर्दे दिल भी साथ है औ दर्द भरी आवाज भी ॥

॥ भजन ६८ ॥

क्या बताये श्याम सुन्दर क्या क़यामत ढाये है।
याद आते ही कलेजा सीने से निकला जाये है ॥
जब नहीं आते हो तुम फिर याद भी क्यों आये है।
इससे भी कह दो ये तकलीफ क्यों फरमाये है ॥
आ भी जाओ आ भी जाओ दीनबन्धू दीनानाथ।
आँखें हैं दर्शन की प्यासी औ दम निकलना चाहे है ॥
जो किया था वादा तुमने दुःख मिटाने के लिये।
हम तो जीते हैं उसी पर और तूं भूला जाये है ॥
डूबने को है शफीना थाम लो पतवार अब।
वर्ना रुतबा आपका मेरे संग डूबा जाये है ॥

॥ भजन ६६ ॥

कूदे यमुना में कन्हैया लेके मुरली।

(१)

कूद पड़े बनवारी जल में, ग्वाले ठाढ़े रोये।
कुछ तो ग्वाले घर को भागे कुछ यशुदा जाय पुकारे।
जल में कूदि गयो तेरो छइया लेके मुरली॥ कूदे० ॥

(२)

रोवत रोवत यशुदा मैया यमुना तट पर आई।
मुझे छोड़कर कहा चलो हो मेरे कृष्ण कन्हाई।
ठाढ़ी रोवे तोरी मैया लेके मुरली॥ कूदे० ॥

(३)

कृष्ण गये पाताल लोक वहाँ नागिन बैठी पाई।
सो रहा नाग जग रही नागिन बोले कृष्ण कन्हाई।
गेंद दे दे मोहे नागिनिया ले के मुरली॥ कूदे० ॥

(४)

इतनी सुनके नागिनियाँ ने नाग को लिया जगाय।
लगी फूंकार वदन भयो काला लिपट शीश से जाय।
कालो पड़ गयो नन्द को छैया लेके मुरली॥ कूदे० ॥

(५)

माया करके प्रभू ने फिर से अपना बदन पसारा।
चरण पकड़कर नागिन रोये छोड़ो पति हमारा।
तब से हो गये नाथ - नथैया लै के मुरली॥ कूदे० ॥

॥ कृष्ण जन्माष्टमी ॥

जन्म - दिवस आया है प्रभू का आधी रात के ढलने में।
सारे जग का पालन कर्त्ता भूलेगा खुद पलने में॥

(१)

लगता है प्रभू ऊब गये हैं, स्वर्ग में अब रहते रहते,
पीड़ित हो गये स्वयं कृपालू भक्तों की पीड़ा सहते,
छोड़ दी अपनी बागडोर जो जग के हाथों चलने में,
सारे जग का पालन कर्त्ता भूलेगा खुद पलने में॥

(२)

देखो हरि की लीला कैसी कैसा रूप बनायेंगे,
परम पिता कहलाने वाले अब बेटे कहलायेंगे,
जाने क्या पायेंगे बच्चों की सी आदत डलने में,
सारे जग का पालन कर्त्ता भूलेगा खुद पलने में॥

(३)

होगा जो अवतार आज उस चक्र सुदर्शन धारी का,
आज का व्रत फिर सफल हो गया समझो हर नर नारी का,
शिव शक्ती मंडल की भक्ती भी आई अब फलने में,
सारे जग का पालन कर्त्ता भूलेगा खुद पलने में॥

॥ भजन ७० ॥

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।
शर्त ये है जरा प्रेम औ दिल से हो॥
हा ! लड़कपन गुजारा है सब खेल में,
तो जवानी गँवाई है धन लेन में,
अब बची जो है इस ही में गाते चलो॥ प्यारे० ॥
प्रेम प्याला प्रभू का पिलाते चलो,
मस्त हो खुद रहो औ छकाते चलो,
सुख फिरता है पीछे जो गाते चलो॥ प्यारे० ॥
ये गोविन्द अनमोल गो है सही,
पं ये मिलता है बिन मोल लो तो सही,
ये तो मिलते हैं जल्दी जो मिल के चलो,
अब तो गोविन्द गोपाल गाते चलो॥

॥ रसिया ॥

प्राणी भजले राधेश्याम काम तेरे कोई न आवेगो।

(१)

देख सब स्वारथ को संसार, मात-पितु भ्राता सुत वो नार,
भजन कर हरी का बारम्बार जा दिन सुवा उड़े,
संग तेरे कोई न जावेगो॥ प्राणी भजले० ॥

(२)

बना यह कुदरत रूपी ख्याल, लपेटा ऊपर माया जाल,
भजन कर तज दे सब जंजाल – तज मन सोच विचार,
हाथ मल मल पछतावेगो ॥ प्राणी भजले० ॥

(३)

देख तूँ काम क्रोध को मार, दया ले अब हृदय में धार,
मिले तोहि निश्चय कृष्ण मुरार - भव सागर में परयो परयो,
नर गोता खावेगो ॥ प्राणी भजले० ॥

(४)

करम कछु पहिले कर आयो, जो देह तूँ मानुष की पायो,
गीत गोविन्द नहीं गायो - लख चौरासी भोग,
जन्म क्यों वृथा गंवाते हो ॥ प्राणी भजले० ॥

॥ रसिया ॥

कैसे बैठे हो आलस में, तोसे राम कह्यो ना जाय।
राम कह्यो ना जाय तो पै श्याम कह्यो ना जाय ॥ कैसे० ॥
भोर भयो मल मल मुख धोयो, दिन चढ़ते ही उदर टटोल्यो,
तन बातन सब दिन खोयो, साँझ भई पलंगा पर सोयो।
सोवत सोवत उमर बीत गई काल शीश मंडराय ॥ कैसे० ॥
लख चौरासी में भरमायो, बड़े भाग्य नर देह तूँ पायो,
अब की चूक न जाना भाई, लुटने पावे नहीं कमाई।
'राधेश्याम' समय फिर ऐसो बार बार नहिं आय ॥ कैसे० ॥

॥ रसिया ॥

अरे वा दिन की सुधिकर प्राणी,
जा दिन लै चल लै चल होय।
सब छोड़ देय मझधार,
अन्त में काम न आवे कोय ॥ अरे० ॥

(१)

संग जाय नहिं मात पिता दारा सुत भ्रात,
और करे मीठी बात काम आवे नाय मित्र,
देख ससुर जमाई कोई होय न सहाई,
नातेदारी अश्नाई झूठी माया के चरित्र,
जब राम राम होय सत्य सनेही कसके बान्धे तोय ॥ अरे० ॥

(२)

बाला पन माहिं आयु खेल के गवाई,
जब आयी तरुणाई कियो त्रिया संग नेह,
फिर बृद्धापन आयो तुहूँ माया में भुलायो,
नहिं माने समुझायो अन्त तज दीन्ही देह,
संग चले न एक छदाम वृथा क्यों पाप भार रह्यो ढोय ॥ अरे० ॥

(३)

छोड़ चित्रसारी जाय बन के भिखारी,
नाय पहिले विचारी राग द्वेष परयो मन,
धरे रहे राग रंग हूर - मुनिया मृदंग,

दया धर्म जाये संग और किन्ही जो भजन,
तेरे महल खड़े मुसकाय त्रिया द्वारे पै ठाढ़ी रोय ॥ अरे० ॥

(४)

अतर फुलेल औ लगाय अंग तेल,
तूंने समझ्यो है खेल चले टेढ़ी मेढ़ी चाल,
गुण अपने ही गावे हाथ मूंछन फिरावे,
खूब अकड़ दिखावे झूठ साँच की न ख्याल,
तूं हाथ पाँव फैलाय जायेगो आँख मूंदि के सोय ॥ अरे० ॥

(५)

चेत कर मूढ़ समझाऊँ तत्वगूढ़,
मन करि लै अरूढ़ भज राधिका चरण,
तेरी आयू रही थोरी, बास कर वृज खोरी,
दया करेगी किशोरी साँचो होय जो लगन,
जब समय जायेगो निकसि फेर पछताये कछू ना होय ॥ अरे० ॥

॥ रसिया ॥

प्रभु जी और न भावे काम राम तेरी करूँ मजूरी है।
बहुत दिना बेकार रहा मैं, ढोता जग का भार रहा मैं,
शाम सवेरे भटका फिर भी पड़ी न पूरी है ॥ प्रभु० ॥
हैं बेदर्द सभी जग वाले, तन धन के मद में मतवाले,
इनकी मुझसे होती है नहिं अब जी हजूरी है ॥ प्रभु० ॥

अब तो प्रभु मैं दास हूँ तेरा, होगया दुखिया खास हूँ तेरा,
मिले मजूरी में भगवन चरणों की धूरी है॥ प्रभु०॥
तेरे दरश का मैं हूँ रोगी, मुझे कहें सब तेरा वियोगी,
तेरा दास हुआ तो पाया ये मशहूरी है॥ प्रभु०॥

श्री सीता राम चन्द्राभ्यां नमः

चौपाई

मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवौ सो दशरथ अजिर बिहारी॥

दोहा

(१)

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार।
वरणौं रघुवर विमल जश जो दायक फल चार॥

(२)

राम लषन रिपुहन भरत, श्रुति कीरति हनुमान।
सीय उर्मिला मान्डवी, सदा करहु कल्याण॥

॥ कवित्त ॥

राम सो न किन्ही रति किन्ही रति वाम ही सों,
राम रूप चाह्यो नहिं चाह्यो रूप वाम को।
राम को न ध्यायो ध्यायो रात दिवस वाम ही को,
राम को न चाह्यो कियो चाह्यो निज काम को॥

राम को बिसारयो ना विसारयो दाम धाम वाम,
राम को मनायो ना मनायो तेह राम को।
राम सों न नेह नेह देह में लगायो नीच,
वाम गुण गायो पै न गायो गुण राम को॥

॥ भजन ७१ ॥

छाड़ि के बुरइया भजो रे प्यारे राम राम॥ टेक०॥

(१)

चार दिना का जीवन प्यारे क्यों तूँ करे बुरइया।
नर तन पाके राम सुमिर ले पाछे ना पछतइया॥ भजो०॥

(२)

विसरा के वो स्वामी को तूँ दर दर करे घुमैया।
बिना राम आराम नहिं है, कर ले कोटि उपैया॥ भजो०॥

(३)

चाहे भज ले राम रमैया चाहे कृष्ण कन्हैया।
दोनों ही कल्याण करेंगे तेरा मेरा भैया॥ भजो०॥

(४)

सेवक बनकर आत्म निवेदन चरणों में रघुरैया।
दीनबन्धु करुणा कर स्वामी पार करेंगे नैया॥ भजो०॥

॥ भजन ७२ ॥

तूं भजनियाँ कैला राम तोहरी थोड़ी जिन्दगनियाँ
तूं भजनिया कैला राम ॥ टेक० ॥

लख चौरासी भटक के प्यारे तब मानुष तन पायो,
राम भजन को भूल गयो औ जीवन व्यर्थ गवायो--
माना हमरा ई बचनियाँ तूं भजनिया कैला राम ॥ १ ॥

धन दौलत अरु माल खजाना यहीं पड़ी रह जइहैं,
राम भजन विन सुन ऐ प्यारे बीच में गोता खइहैं--
झूठा जग की है कहनियाँ तूं भजनियाँ कैला राम ॥ २ ॥

झूठा है सब कुटुम्ब कबीला झूठी जग की यारी,
सोच सोच पग धरना प्यारे छाई अति अंधियारी--
चार दिन की है जवनियाँ तूं भजनियाँ कैला राम ॥ ३ ॥

कवि विनोद का यही है कहना राम भजन कर प्यारे,
अन्त समय कोई काम न अइहैं झूठे झगड़े सारे--
कैला जग में शुभ करनियाँ तूं भजनियाँ कैला राम ॥ ४ ॥

॥ भजन ७३ ॥

भजन बिन राम के मूरख गती क्यों कर तूं पायेगा।
विषय के मौज में सारी उमरिया बीत जावेगा ॥

(१)

खबर तुमको नहीं निशदिन पड़े है काल का पहरा।
न मालूम किस समय तुमको पकड़ कर के ले जायेगा ॥

(२)

भूल जाम्रोगे सुख सारे लगेंगे जम के जब कोड़े।
संभल तूँ होश में म्राके गया दिन फिर न म्रायेगा ॥

(३)

मिला चैतन्य चोला है भजन हरी नाम का कर ले।
इसी में है भला तेरा म्रन्त में मोक्ष पायेगा ॥

(४)

न लाया साथ में कुछ ही न म्राखिर ले के जायेगा।
जगत् को छोड़कर माया पसारे हाथ जायेगा ॥

॥ भजन ७४ ॥

श्री राम धुन में मगन कब होइ हौं ॥ टेक० ॥
है झूठे जग की झूठी माया, मनुवारे तूँ क्यों भरमाया,
तन छूटे पछि तैहो - मगन कब होइहौं ॥ श्री राम० ॥
ना तेरा कोई न तूँ ही किसी का सारा झमेला है जीतेही जीका,
कब इनको बिसरइहो - मगन कब होइहौं ॥ श्री राम० ॥
पल पल छिन छिन म्रायू घटत है, म्रन्त घड़ी भी म्राई निकट है।
कब मन हरी से लगइहो - मगन कब होइहौं ॥ श्री राम० ॥

दुनियाँ का सब काम भुला के, मन को हरी चरणों में लगा के,
जीवन धन्य बनइहो - मगन कब होइहौं ॥ श्री राम० ॥
सत्संगत में निशदिन जा के, सन्त चरण रज शीश चढ़ा के,
आनन्द मगन होइ जइहो - मगन कब होइहौं ॥ श्री राम० ॥
राम नाम की झोली भर के, निशदिन सीताराम उचरि के,
प्रेम की गंगा बहइहो - मगन कब होइहौं ॥ श्री राम० ॥
प्रेम निधी में गोता लगा के, काया का सब मैल छुड़ा के,
भवसागर तर जैइहो - मगन कब होइहौं ॥ श्री राम० ॥

॥ शेर ॥

सुमिरन कर श्री राम नाम का, जो सब सुख का धाम ।
खाली झोली सब की भरते, ऐसे दाता राम ॥

॥ भजन ७५ ॥

दाता एक राम भिखारी सारी दुनियाँ ॥ टेक० ॥
निर्धन तो मांगे ही मांगे मांगे साहूकार,
राजे महराजेहू मांगे, बड़ी बड़ी जिनकी बनी है रजधनियाँ ॥
दाता एक राम.........
सज्जन मांगे दुर्जन मांगे, मांगे चतुर गवार,
रोगी जोगी भोगी मांगे, मांगे अभिमानी मानी ध्यानी ज्ञानी गुनियाँ ॥
दाता एक राम.........

हाथ जोड़कर मांगे कोई, दोनों हाथ पसार,
नाच गाय के मांगे कोई, कोइ मन ही मन फेरे सुमरनियाँ ॥
दाता एक राम.........

देते देते राम थके ना मांग मांग संसार,
भेदभाव बिन देते सबको भर भर पेट भोजन और पनियाँ ॥
दाता एक राम.........

॥ भजन ७६ ॥

ऐ मन राम सिमर ले विती जाती है उमरिया,
राम विना ना लेगा कोई तेरी रे खवरिया ॥ ऐ मन० ॥

(१)

मानुष तन पाया है तो सोच समझ से काम ले,
तज के झूठी मोह माया को, राम का दामन थाम ले,
बिना राम के पार न होगी तेरी रे नवरिया ॥ ऐ मन० ॥

(२)

विषयों में पड़कर के तूंने मानुष जन्म गवाया है,
धन और पाप कपट ने तुझको अपने में भरमाया है,
इन पापों की गठरी ढोते वीतेगी उमरिया ॥ ऐ मन० ॥

(३)

अब भी वक्त है सोच ले वन्दे समय फेर ना आयेगा,
ध्यान लगाले प्रभू चरणों में जीवन सफल बनायेगा,
"सेवक" की भी लाज बचाओ आके रे शवरिया ॥ ऐ मन० ॥

॥ भजन ७७ ॥

बोलो जयराम की जय सियाराम की जय।
बात सुन काम की ले शरण राम की॥

(१)

हरी भजन को ये कहते हो टाइम नहीं,
जिस पे फूले हो यह दुनियाँ कायम नहीं,
सुख साचा न इसमें यह वे काम की॥ बोलो०॥

(२)

हर समय सबके पीछे पड़ी फिक्र है,
रोग कोई नहीं भोग का जिक्र है,
आखिर सोचो जरा फिक्र किस काम की॥ बोलो०॥

(३)

ढूढ़ते रोज आराम पाते नहीं,
फिर भी सतसंग में मन लगाते नहीं,
कुछ तो सोचो जरा देह है चाम की॥ बोलो०॥

॥ भजन ७८ ॥

जै जै अवध बिहारी, सीता राम सीता राम॥ टेक०॥
कौशल पुर में जन्म लियो है, मातु पिता को मोद दियो है,
दशरथ अजिर बिहारी, सीता राम सीता राम॥ १॥

बन में जाय ताड़िका मारी, गौतम नारि अहिल्या तारी,
कौशिक भख रखवारी, सीता राम सीता राम ॥ २ ॥
मिथिला जाकर धनुष को तोड़यो, जनक राम को संशय,
तोड़यो परशुराम मद हारी, सीता राम सीता राम ॥ ३ ॥
अवध राज को त्याग दियो है, बन में जाय चरित्र कियो है।
सुर नर मुनि मन हारी, सीता राम सीता राम ॥ ४ ॥
शवरी के मीठे फल खाये, भालु कपिन्ह को कंठ लगाये।
भक्तन के भय हारी, सीता राम सीता राम ॥ ५ ॥
रावण को बैकुंठ पठायो, भक्त विभिषण भूप बनायो,
सीता के दुःख हारी। सीता राम सीताराम ॥ ६ ॥
सेवक है यह शरण तुम्हारी, कृपा करो अब अवध विहारी,
कौशिल्या हितकारी, सीताराम सीताराम ॥ ७ ॥

॥ भजन ७६ ॥

भजन श्री राम का कर ले इसी में सब भलाई है।
नहिं दुनिया में ऐ गाफ़िल कोई उस दिन सहाई है ॥
पड़ा है मोह माया में अरे नादान क्यों भूला।
यह कैसी मूढ़ ताई यार दिल पर तेरे छायी है ॥
जो लज्जत नाम लेने से जवां पर आई है मेरे।
शकर वो कंद मिश्री में न पाई है न पाई है ॥
भजन ही सार है जग में समझ ले खूब ऐ शंकर।
यही सब साथ जाने वाली दुनियाँ की कमाई है ॥

॥ भजन ८० ॥

जब तक कि भजन कीर्तन गाये न जायेंगे।
जो लद रहे हैं पाप मिटाये न जायेंगे॥

(१)

भगवान दया सिन्धु दया करके आइये।
कर्मों के बोझ हमसे उठाये न जायेंगे॥

(२)

संसार के सागर में पड़े डूबते बोलो।
क्या हम कभी किनारे लगाये न जायेंगे॥

(३)

पापी हूँ अधर्मी हूँ कुकर्मी हूँ तार दो।
ये आप के एहशान भुलाये न जायेंगे॥

(४)

तुम सर्व शक्तीमान हो करुणा निधान हो।
हम बिगड़े हैं क्या राह पै लाये न जायेंगे॥

(५)

इस दीन पै गर आपने कीन्ही दया नहीं।
दीनों के नाथ आप कहाये न जायेंगे॥
"चंचल" न यहाँ आयेंगे भगवान तब तलक।
जब तक कि भजन कीर्त्तन गाये न जायेंगे॥

❀ ❀ ❀

॥ भजन ८१ ॥

मगन मन मस्त हो करके भजन दिन रात कर प्राणी।
इसी से पार होना है हमेशा ध्यान रख प्राणी॥
ये ऐसा मन्त्र है जिससे हजारों पाप कटते हैं।
न खोना वस्तु तुम ऐसा भजन दिनरात कर प्राणी॥
अगर रोके कोई टोके तो उसकी फिक्र मत करना।
मिलेगा फल बुरा उसको भजन दिन रात कर प्राणी॥
भलाई है तेरी इसमें इसी से जग खड़ा सारा।
पतित पावन ये कहते हैं भजन दिन रात कर पाणी॥
नर के नाथ हैं वो और सन्तों के हैं सुखदायी।
इसी से हम भी कहते हैं भजन दिन रात कर प्राणी॥

॥ भजन ८२ ॥

प्रभू का ही भरोसा है वही मुझको निभायेंगे।
लगी है लव मेरी उनसे कभी तो आ ही जायेंगे॥
मुझे अपना समझ करके दशा बिगड़ी सुधारेंगे।
क्षमा करके मेरे अवगुण शरण में खुद बसायेंगे॥
दयालू दीनबन्धू हैं दीन दुखियों के हितकारी।
दया मुझ पर भी कर देंगे मेरा भी भार उठायेंगे॥

नाम के ही सहारे पै कदम आगे बढ़ा दी है।
पकड़कर हाथ खुद मेरा मुझे अपना बनायेंगे॥
बहे भव में मेरी नैया नहीं मुझको कोई ग़म है।
कहे माया कृपा कर के कभी तो पार लगायेंगे॥

॥ भजन ८३ ॥

कण कण पै करुणा तेरी करुणेश चमकती है।
मुझ कण पै तेरी करुणा फिर क्यों न बरसती है॥
हठि हठि अधम उधारे कहते हैं सूर तुलसी।
मैं पास ही चरण में कैसे बने उदासी॥
पापी को तारने का ठेका तुम्हारा ही है।
मुझको न तारने की खाई कशम सो क्यों है॥
तुम तार तार पापी बन गये हो पतित पावन।
तब नाथ हे बता दो हमसे ही घृणा क्यों है॥
दुखियाँ हूँ दुःख मेटो हूँ दीन तो दया दो।
सन्तान हूँ तो पालो बिगड़ा हूँ तो सँभालो॥
पापी हूँ तो उबारो अशरन हूँ तो शरण दो।
गर भक्त हूँ तो कह दो सेवक तूँ है हमारा॥

॥ कैसे सफरी ॥

राउर बिगड़लबा चलनियाँ कैसे सफरी ॥ टेक० ॥

जन्म जन्म के नात साथ के देहलन हाय बिसारी,
करुणा निधि कृपाल रघुवर हैं वेद विदित दुःखहारी,
ऐसन ब्यापक बा बचनियाँ कैसे सफरी ॥ राउर० ॥

दीनानाथ दीन के पालक गइलै भूल सजनवाँ,
बिरद बिसारन भये निठुर अब हो गइलै बेगनवाँ,
इनकर बिगरल बा तकनियाँ कैसे सफरी ॥ राउर० ॥

गुनि गुनि नेह गेह तजि अइली लोक लाज सब छूटल,
संग संघाती कुल कुटुंब के ताग तड़ातड़ टूटल,
नाहक भइलें परेशनियाँ कैसे सफरी ॥ राउर० ॥

पहले किये करार साँवरे हम तुम एक संघाती,
नेह लगाय बढ़ाय प्रीति के अब जारत हैं छाती,
जर जर कै देहलै परनियाँ कैसे सफरी ॥ राउर० ॥

मन्द मधुर मुस्काय मोहि मन बन गइलें चित चोर,
चाहक और न होत कोई तऽ कैसन हयन कठोर,
इनकर देखित मर दनियाँ कैसे सफरी ॥ राउर० ॥

रंक राउ के करै छिनक में रंक के कर दें राजा,
तुंबा फेरीक गुन बाटै लोग कहैं महराजा,
जैसे कसर वानी बनियाँ कैसे सफरी ॥ राउर० ॥

गुरू गोविंद दोऊ के बीच में बाटै अरज हमारी,
"सरससंत" डूबत भवसागर कर गहि लेहु उबारी,
दै के अभय वरदनियाँ कैसे सफरी ॥ राउर० ॥

॥ भजन ८४ ॥

तेरे दरबार लेकर भेंट दिल की नाथ आया हूँ ॥ टेक० ॥

(१)

अधम हूँ नीच हूँ पापी पतित अति दीन हूँ भगवन।
तेरे चरणों के चिन्तन में न दिल अपना लगाया हूँ ॥

(२)

नहीं कोई मेरा साथी सभी रिश्ते हैं स्वारथ के।
मेरे रघुनाथ जी प्यारे तेरे चरणों में आया हूँ ॥

(३)

कहाँ जाऊँ कहूँ किससे नहीं कोई हमारा है।
चरण में रहने दो प्रभु जी जगत से मैं सताया हूँ ॥

(४)

चरण का दो सहारा अब दया के सिन्धु रघुनन्दन।
पड़ा हूँ चरणों में तेरे चरण में सिर झुकाया हूँ ॥
बनाकर प्रेम निधी अपना लगा लो नाथ सेवा में।
लगाकर छाप तेरा ही तुम्हारा ही कहाया हूँ ॥

॥ भजन ८५ ॥

श्री राम भजन ही सार वन्दे कलियुग में ॥ टेक० ॥

(१)

जप तप पूजा पाठ निराले, किसी काम नहिं आने वाले,
चढ़ जाये अहंकार वन्दे कलियुग में ॥ श्री राम० ॥

(२)

कथा कीर्त्तन है इक साधन जिससे निर्मल होता है मन,
ऊपजे शुद्ध विचार वन्दे कलियुग में ॥ श्री राम० ॥

(३)

तेरा धर्म है प्रभु को सुमिरना, अगला काम है राम ने करना,
मन में धीरज धार वन्दे कलियुग में ॥ श्री राम० ॥

(४)

राम नाम गुण गाये जा तूँ, जीवन सफल बनाये जा तूँ,
छोड़ के सोच विचार वन्दे कलियुग में ॥ श्री राम० ॥

(५)

दुःख सुख चक्कर हैं कर्मों के, चिन्ता ममता फल भर्मों के,
ना हरी नाम विसार वन्दे कलियुग में ॥ श्री राम० ॥

(६)

ऊमां कहूँ मैं अनुभव अपना, सत हरी भजन जगत सब सपना,
कहते थे त्रिपुरार वन्दे कलियुगे में ॥ श्री राम० ॥

(७)

चमन त्याग जो त्यागना चाहे, मोह-निन्द्रा से जो जागना चाहे,
तज दे विषय विकार वन्दे कलियुगे में ॥ श्री राम० ॥

॥ प्रार्थना ॥

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये,
जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये॥

(१)

मुख में हो राम नाम राम सेवा हाथ में,
तूं अकेला नाहीं प्यारे राम तेरे साथ में,
विधि का विधान जान हानि लाभ सहिये,
जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये॥

(२)

किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा,
होगा प्यारे वही जो श्री राम जी को भायेगा,
फल आशा त्याग शुभ काम करते रहिये,
जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये॥

(३)

जिन्दगी की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के,
महलों में राखे चाहे झोपड़ी में वास दे,
धन्यवाद निर्विवाद राम नाम कहिये,
जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये॥

(४)

आशा एक राम जी से दूजी आशा छोड़ दे,
नाता एक राम जी से दूजा नाता तोड़ दे,

साधू संग राम रंग अंग अंग रंगिये,
काम रस त्याग प्यारे राम रस पगिये॥
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये,
जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये॥

॥ भजन ८६ ॥

करुणानिधि करुणा करनी तुम्हें, चाहे आज करो या क़ाल करो।
जो संकट है मुझ पै भगवन, चाहे आज हरो या काल हरो॥१॥

मैं पापी श्रेष्ठ कहाता हूँ तुम तारक श्रेष्ठ कहाते हो,
उद्धार तुम्हें करना ही है चाहे आज करो या काल करो॥२॥

तुम अंशी विज्ञ कहाते हो हम अंश अज्ञ कहलाते हैं।
दोनों का मिलना निश्चित है चाहे आज मिलो या काल मिलो॥३॥

तुम जग के पिता कहाते हो तो क्या हम जग से बाहर हैं।
निज पुत्र को अपने शरणों में चाहे आज करो या काल करो॥४॥

तुम भव सागर के नाविक हो मैं भव सागर का यात्री हूँ।
करना सेवक को पार तुम्हें चाहे आज करो या काल करो॥५।

॥ प्रार्थना ॥

श्री राम राघव यह प्रार्थना है सीता पते हे यह कामना है।
निष्काम होके गाऊँ निरन्तर श्री राम राघव यह भावना है ॥
सीता पते हे त्रय ताप हारी, मेरी सुनो हे सारंग धारी।
श्री राम राघव रघुवंश भूषण मेरे हरो नाथ त्रय ताप दूषण ॥
देहान्त काले प्रभु सामने हो वैदेही सहितम् शारंग पाणी।
ध्याता युगल रूप तन नाथ त्यागूं गाता तजूं प्राण श्रीरामसीता ॥
हे दीन बन्धू करुणैक सिन्धू सेवक सुसेब्य आरत सुबन्धू।
दे दो सुबुद्धि गाऊँ निरन्तर श्री राम रघुनन्दन राघवेती ॥

॥ प्रणाम हमारा कह देना ॥

ओ जाने वाले रघुवर से प्रणाम हमारा कह देना।
कहीं भूल न जाना रस्ते में, प्रणाम हमारा कह देना ॥

(१)

ओ राम लषण वनवासी से, और सीता जनक दुलारी से।
और भरथ शत्रुघन भइया से, प्रणाम हमारा कह देना ॥

(२)

ओ राजा दशरथ रानी से, और सारी वानर सेना से।
और पवन पुत्र वजरंगी से, प्रणाम हमारा कह देना ॥

(३)

ओ शिव शंकर कैलाशी से, और उमा हमारी माता से।
और मूसक वाहन गणपति से, प्रणाम हमारा कह देना ॥

(४)

ओ साधु संत संन्यासी से और गऊ हमारी माता से।
और वेद शास्त्र सब पुराणों से, प्रणाम हमारा कह देना ॥

(५)

ओ बाल्मीकि रामायण से, और तुलसी कृत रामायण से।
और गीता अर्जुन कृष्णा से, प्रणाम हमारा कह देना ॥

॥ श्री राम चरित मानस ॥

(१)

कटत कराल कलिकाल के कलेश सब,
मानस को पाठ नित्य प्रेम सो जो करतौ।
भक्ती को सरूपहू अनूप दरसाय उर,
कालहू सभीत ह्वै पछीत में कहरतौ ॥
नीती को पढ़ाय ये सिखाय देत धर्म - कर्म,
कामधेनु रूप याहि संतन उचरतौ।
मानस महानता 'मुकुंद' जू बखानौ किमि,
सागर कौ नीर कहुँ गागर में भरतौ ॥

(२)

वेद मत सोधि, सोधि सोधि कै पुराण सवै,
संत औ असंतन को भेद को बतावतो।
कपटी कुराही क्रूर कलिके कुचाली जीव,
कौन राम नाम हूँ की चरचा चलावतो।

'वेनी' कवि कहे मानो मानो हो प्रतीति यहं,
पाहन हिये में कौन प्रेम उपजावतो।
भारी भव सागर उतारतो कवन पार,
जो पै यह रामायन तुलसी न गावतो।

दोहा

राम चरित मानस विमल, सन्तन जीवन प्रान।
हिन्दुग्रान को वेद सम, यवनहि प्रगट कुरान॥

सवैया

(१)

जो फल कोटिन यज्ञ किये, अरु जो फल मक्र प्रयाग नहाये।
जो फल योग अखंड करै, अरु जो फल पूरन नेम निवाहे।
जो फल धामन के परसे, अरु जो फल क्षेत्र न वास बसाये।
जो फल दान अमान किये, इक सो यह राम कथा फल गाये॥

(२)

छाड़ि वृथा वकवाद सवै, निश्चै करि के नित चित्त लगावै।
भक्ती समेत भली विधि सौ, करि पूजन पुस्तक शीश चढ़ावै।
उच्छव सो करि ले करि आरति, पुष्प चहुँ दिशि में बरसावै।
पावै तिहू पुर की सम्पदा, तुलसीकृत राम चरित्र जो गावै॥

॥ रामायण महात्म ॥

हमें निज धर्म पर चलना बताती रोज रामायण।
सदा शुभ आचरण करना सिखाती रोज रामायण॥

जिन्हें संसार सागर से उतर कर पार जाना है।
उन्हें सुख से किनारे पर लगाती रोज रामायण॥

कहि छबि विष्णु की बांकी कहीं शंकर की है झांकी।
हृदय आनन्द झूले पर झुलाती रोज रामायण॥

सरल कविता की कुंजी में बना मन्दिर है हिन्दी का।
जहाँ प्रभु प्रेम का दर्शन कराती रोज रामायण॥

कभी वेदों के सागर में कभी गीता की गंगा में।
कभी इस 'बिन्दु' में मन को डुबाती रोज रामायण॥
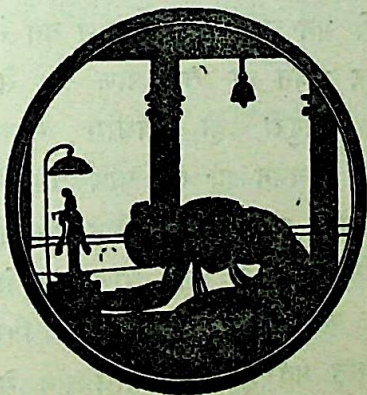
॥ शंभवे नमः ॥

॥ कवित्त ॥

कर त्रिशूल खप्पड़ डमरू विराजत है,
शीष सोहे गंग चन्द्र शोभा के करन है।
मुण्डन के माल तीन नैन हैं विशाल,
देखि काँपत है काल रिद्धि सिद्धि के भरन है।
चार फलदायक जाको पुत्र है विनायक,
संग नारि सब लायक मानो सुवरण से वरण है।
तारण तरण अशरण के शरण,
दुःख दारिद्र दरण शिवा शिव के चरण है॥

॥ भजन ८७ ॥

शिव शिव के मन शरण हो तब प्राण तन से निकले।
जिव्हा पै हर भजन हो तब प्राण तन से निकले॥
शिव धाम शिवपुरी हो विश्राम सुरसरी हो।
उस जल का आचमन हो तब प्राण तन से निकले॥
शिव शिव शिवा उमा हो, या शिव उमा शिवा हो।
हर हर पुनि रटन हो, तब प्राण तन से निकले॥
हृदय सुचि कमल हो, बुद्धि मेरी विमल हो।
तृष्णा से शान्त मन हो, तब प्राण तन से निकले॥

॥ भजन ८८ ॥

चित्त से कभी न शंकर मुझको उतार देना।
मैं हूँ पड़ा शरण में मुझको उबार देना॥

(१)

पावन पतित पुरातन परमात्मन् विदित हो।
पतितों की श्रेणी से मत मुझको विसार देना॥

(२)

प्रभु दीन पालने की वर बानी आपकी है।
भ्रम वश कहीं न हे हर मुझको विसार देना॥

(३)

भय ताप मोचनी है चितवन तेरी त्रिलोचन।
दृग कोर से कभी तो मुझको निहार देना॥

(४)

तुम्हरी उदारता को जाने है "चन्द्रशेषर"।
माँगे है भक्ती अपनी मुझको अपार देना॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

है तन पै भस्मी गले में विष घर नमामिशंकर नमामिशंकर।
तुम्हारी मूर्त्ती है अति मनोहर नमामिशंकर नमामिशंकर॥

(१)

जटा से गंगा की धार निकली, विराजे मस्तक पै चन्द्रटिकुली।
सदा विचरते बने दिगम्बर, नमामिशंकर नमामिशंकर॥

(२)

रूए रुबे में तुम्हीं हो ब्यापक, बुझाऊँ जाकर कहाँ लगी मैं।
लगी बुझादो दया के सागर, नमामिशंकर नमामिशंकर॥

(३)

तुम्हें समर्पण ये आत्मा है, सिवा तुम्हारे न दूसरा है।
चढ़ाऊँ चन्दन मैं मन से घिसकर, नमामिशंकर नमामिशंकर॥

॥ भजन ८९ ॥

सुनो अब टेर गंगाधर हमारी आज बारी है।
तुम्हारे हाथ दीनानाथ अब लज्जा हमारी है॥
कहाते जबकि भोलानाथ हो तो टेर सुन लो अब।
हमारी याद अपने दिल से क्यों तुमने विसारी है॥
तुम्हारा ही सहारा है तुम्हीं ने हाथ पकड़ा है।
अकेला छोड़ दोगे तो हँसी इसमें तुम्हारी है॥
हमारी हर विपद को हर जो हर लोगे दया करके।
तो होगी दूर जो दिल में हमारे बेकरारी है॥
उमेश अपना करो प्रण पूर्ण जो तुमने किया हमसे।
न ठुकराओ तुम्हारी ही मुहब्बत के भिखारी हैं॥
चरण पकड़े तेरा सेवक मुझे आशीष दो बाबा।
तुम्हीं भरते हो भंडारा तुम्हीं करते भिखारी है॥

॥ गजल ॥

हर हर भजो तो हर बला से हर बचायेंगे।
कोई कभी हरगिज़ न तेरे काम आयेंगे॥
काशी है धाम मुक्ती को देखो पुराण में।
महिमा लगा के कान सुनो तो सुनायेंगे॥
जो जो मरे तुरतै तरे पापी बड़े बड़े।
यम देख के उनकी शकल को भाग जायेंगे॥
पावनपुरी पवित्र है त्रैलोक से न्यारी।
काशी की कला को नहीं वैकुंठ पायेंगे॥
गंगा की लहर में लहर क्या क्या नजर आती।
शिव सन्त के हरदम हिये निश दिन दिखायेंगे॥
कहते हरि शंकर मेरे शिव इष्ट देव हैं।
उनकी कृपा से भक्त जगत में कहायेंगे॥

॥ भजन ६० ॥

करोगे कब दया हम पर दया निधि है लगी आशा।
दयानिधि है लगी आशा कृपानिधि है लगी आशा ॥टे०॥
तुम्हारे ध्यान में रहते किसी से कुछ नहीं कहते।
लगी है भूख दर्शन की फकत हूँ प्रेम का प्यासा॥
तुम्हें जिस रोज से बूझा अलख गती नैन से सूझा।
जपूँ मैं नाम निशिवासर रहेगी जब तलक स्वांसा॥

मगन मन मस्त हो करके धँसा हूँ ध्यान में हर के।
सदा आनन्द में रहते मेरा आनन्द वन वासा ॥
कहे हरदम हरि शंकर बसो हिय में हमारे हर।
हमें नहीं है किसी का डर बनाते यह पद परम खासा ॥

॥ शिव विवाह ॥

आई शिव जी की बरतिया हिमांचल नगरी ॥

(१)

पुर वासी सब देखन धाये कैसी आई बरात,
कौन कौन से आये बराती कैसी है जमात -
कैसी दुलहा की सुरतिया हिमांचल नगरी ॥आ०॥

(२)

छत पर चढ़ कर तिरिया देखे कौन रंग का दूल्हा,
कोई विचारी घर में बैठी फूँक रही थी चूल्हा,
लादे पापों की गठरिया हिमांचल नगरी ॥आ०॥

(३)

बालक वृन्द गये जनवासे देखत बर को भागे,
अपने अपने घर पर आके हाल कहन सब लागे,
डर के भागी है जननियां हिमांचल नगरी ॥आ०॥

(४)

अगवानी की हुई तैयारी सजने लगी बराती,
कोई चला चूहे पर चढ़कर कोई चला चढ़ हाथी,
टेढ़ी मेढ़ी है डगरिया हिमांचल नगरी ॥आ०॥

(५)

मैनागिरी आरती सजाकर लेन परीक्षा आई,
शिव शंकर का रूप देखकर मन ही मन घबराई,
कैसे बिती है उमरिया हिमांचल नगरी ॥आ०॥

(६)

पार्वती को गोद में लेकर रो रो नीर बहावे,
उसी समय नारद जी ने उन सबको है समझायो,
होने लगी है भंवरिया हिमांचल नगरी ॥आ०॥

(७)

नाई वारी अपना अपना नेग मांगने लागे,
किसी को काला नाग किसी को बिच्छू देने लागे,
डर कर भागी है नउनियाँ हिमांचल नगरी ॥आ०॥

(८)

करन कलेवा शंकर आये भूत प्रेत सब लाये,
बगल में बैठे शुक्र शनिश्चर पूर्व से पेट फुलाये,
देखे तिरछी वो नजरिया हिमांचल नगरी ॥आ०॥

(९)

हँसी मसखरी करने लागी गाँव की सभी नवेली,
कौन तुम्हारे माता पिता हैं कैसी तेरी हवेली,
कैसी काशी की नगरिया हिमांचल नगरी ॥आ०॥

(१०)

नारायण हैं पिता हमारे लक्ष्मी मेरी माता,
भाई बहन हैं सब नर नारी प्रेम का मेरा नाता,
कल की किसको है खबरिया हिमांचल नगरी ॥आ०॥

॥ भजन ६१ ॥

जुवां से भक्तों के हर हर सबक हरदम निकलता है।
मेरे शंकर के डमरू से डमक डम डम निकलता है॥

॥ शैर ॥

रगड़ती भंग थी एक रोज घर में गौरा महारानी,
हुआ कुछ लेट बढ़ गई शंभू के दिल की परेशानी,
तो जाकर गौरा से कहने लगे हँस करके शिव दानी,
जरा जल्दी करो देवी हमारा दम निकलता है॥

॥ शैर ॥

कहा एक रोज गौरा क्या मजा मिलता है पीने में,
कहा शंकर ने कि इक भेद है पी करके जीने में,
जगत् संहार करने का भयानक ग़म है सीने में,
धतूरा भांग पीने से जिगर का ग़म निकलता है॥

॥ शैर ॥

हुये खुश भस्माशुर पै तो दिये वरदान है आला,
जपा रावण उन्हें दिल से उसे लंका ही दे डाला,
दिवाना जो हुआ उनका वो रहता मस्त मतवाला,
पर उनको चाहने वाला जिगर से कम निकलता है॥

॥ शैर ॥

रमाये भस्म अंगों में दबाये भांग का झोला,
लिये नन्दी को संग में दम लगाते चल दिये भोला,
लिये त्रिशूल डमरू कर औ संग में प्रेतों का टोला,
जटा पे चन्द्रमा उनके चमक चम चम निकलता है॥

॥ कवित्त ॥ श्री गंगा मां ॥

नीचे है वारिता वारि पै कच्छयप सवार,
ता कच्छप की पीठ पै सवार शेष कारा है।
शेष पै सवार अवनिभार सो दबाय रह्यो,
अवनि पै सवार सिन्धु पर्वत विस्तारा है॥
पर्वत पै सवार कैलाश शिव धाम जहाँ,
कैलाश पै सवार नन्दी असुर समर भारा है।
नन्दी पै सवार शम्भु शम्भु पै सवार जटा,
जटा पै सवार भागीरथी जी की धारा है॥

॥ भजन ९२ ॥

गंगे तरंग तेरी मन को लुभा रही है।
पापों की लगी ढेरी जग से मिटा रही है॥
सुरलोक की हो विरजा गंगा कहा रही हो।
लहरें उमड़ के तेरी सागर में जा रही है॥

भागीरथी ने की है वर्षों तुम्हारी पूजा।
अनुपम अमर कहानी त्रिभुवन में छा रही है॥
चरणों में माता निशदिन परदेशी शिर झुकाता।
आनन्द मूर्त्ती तेरी मन में समा रही है॥

॥ कवित्त ॥

नाम लिये कितने तर जात प्रणाम किये सुरलोक सिधारे।
तीर गये तो गये तो गये कितने तर जात तरंग निहारे॥
तरंग निहारे स्वभाव यही उर के सब दोष विकार निवारे।
भागीरथी हम दोष भरे पै भरोस यही के परोस तिहारे॥

॥ भजन ६३ ॥

गंगा तोरी लहरिया पै जिया ललचै॥टे०॥
श्री विष्णूजी के चरण से श्री मातु गंग आई,
शिव की जटा से शिव शंकरी कहाई है।
दक्षिण से मुख मोड़ विन्ध्य के पहाड़ तोड़,
हर हर कहत मातु श्री काशी जी में आई है॥
काशी में विश्वनाथ देवलोक लिये साथ,
मणी के गिरे से मणि कर्णिका कहाई है।
कहे मन माया घूम आयो चारों धाम,
एक मुक्ती की नगरिया श्री काशी जी बनाई है।
गंगा तोरी लहरिया पै जिया ललचै॥टे०॥

॥ चेतावनी ॥

(१)

ऐश के सामान सब यूँ ही पड़े रह जायेंगे।
यार तेरी लाश पर रोते खड़े रह जायेंगे॥

अपने ऊपर बात कुछ यह मैंने तो छेड़ी नहीं।
बादशाहों के यहाँ झण्डे गड़े रह जायेंगे॥

जिनकी शोहरत का जहाँ में शोर है चारों तरफ।
उनके ताजों पर यहाँ हीरे जड़े रह जायेंगे॥

माल ज़र घर महल भी कुछ साथ जावेगा नहीं।
ताख में रक्खे हुए सोने-कड़े रह जायेंगे॥

हा सितम नर तन का पाकर हरि भजन कीन्हा नहीं।
रमा के दिल में यही अरमां बने रह जायेंगे॥

(२)

जवानी फिर नहीं आती बुढ़ापा मिट नहीं सकता।
उमर वापिस नहीं होती लड़कपन रह नहीं सकता॥

हुआ सो वित चुका पीछे करो कोशिश अगाड़ी का।
मसल मशहूर है देखो गया दिन आ नहीं सकता॥

अगर बेकार दिन खोये तो रोना एक दिन होगा।
मगर ग़म रंज करने से तुम्हें कुछ मिल नहीं सकता॥

मन भगवान का लाजिम हर एक लहमें के अन्दर है।
बिना हरी भजन करने से परम पद मिल नहि सकता॥

॥ चेतावनी ॥

कोई शुभ कर्म कर जाओ समय हाथों से जाता है—२॥

(१)

ये जीवन चार दिन का है अरे इस पर अकड़ना क्या।
जो वस्तु रह नहीं सकती उसे मूरख पकड़ना क्या।
न अपने मन को भटकाओ समय हाथों से जाता है—२॥

(२)

यह मानुष तन बड़ी मुश्किल से तेरे हाथ आया है।
भजन बिन जनम यह अनमोल माटी में रूलाया है।
जरा सोच दौड़ाओ समय हाथों से जाता है—२॥

(३)

समय अनमोल न बरबाद कर माया के मतवाले।
तेरा जीवन तबाह कर देंगे तेरे चाहने वाले।
चाहे कई बार अजमाओ समय हाथों से जाता है—२॥

(४)

सुमिरता जा हरि का नाम जो दुनिया में सुख पाना।
यह जीवन खो गया इक बार तो फिर हाथ नहीं आना।
चमन अब तो संभल जाओ समय हाथों से जाता है—२॥

(५)

शुकर कर उस प्रभू का जिसने इस काबिल बनाया है।
पशु योनी से मानुष तन 'चमन' जिसने दिलाया है।
उसी के दास बन जाओ समय हाथों से जाता है—२॥

॥ कितने दिन ॥

मानव सोचो जग के सुख का विस्तार रहेगा कितने दिन।
सत्कार रहेगा कितने दिन, यह प्यार रहेगा कितने दिन ॥

चाहे पितु हो या माता हो, पत्नी हो सुत या भ्राता हो।
जिसको अपना कहते उस पर अधिकार रहेगा कितने दिन ॥

कोई आता कोई जाता सबसे थोड़े दिन का नाता।
जिसका भी आश्रय लेते वह आधार रहेगा कितने दिन ॥

जो जग में सच्चे ज्ञानी हैं, परमात्म तत्त्व के ध्यानी हैं।
उनसे पूछो मन का माना, संसार रहेगा कितने दिन ॥

तुम प्रेम करो अविनाशी से, मिल जाओ सब उरवासी से।
ऐ 'पथिक' यहाँ मैं मेरा का व्यापार रहेगा कितने दिन ॥

॥ चन्द रोज ॥

हैं बहारे बाग दुनियां चन्द रोज,
देख लो इसका तमाशा चन्द रोज।
ऐ मुशाफिर कूँच का सामान कर,
इस जहाँ में है बसेरा चन्द रोज ॥
पूछा लुकमां से जिया तूं कितने रोज,
दस्त हसरत मलके बोला चन्द रोज।
फिर तुम कहाँ और मैं कहाँ ऐ दोस्तो,
साथ है मेरा तुम्हारा चन्द रोज ॥

क्या सताते हो दिले वे जुर्म को,
जालिमों है ये जमाना चन्द रोज।
याद कर तूँ ऐ नजीर कवरों के रोज,
जिन्दगी का है भरोसा चन्द रोज॥

॥ भजन ६४ ॥

सिया राम भज ले अरे मन दिवाना,
ये जीवन का तेरे नहीं है ठिकाना।
जिसे तूने समझा है घर है हमारा,
न घर है ये तेरा सदन है विराना॥
परिन्दा है मुल्के अदम का मुशाफिर,
क्यों भूला है अपने वतन को दिवाना।
चमन चन्द रोजा ये गुलशन का है तूँ,
तुझे फिर बटोही उसी घर है जाना॥
तेरे साथ जो हैं सभी हैं मुशाफिर,
न तेरा यहाँ कोई अपना बेगाना।
फकत चार दिन की है जोशे जवानी,
इसी पै तूँ नाहक अकड़ता दिवाना॥
तूँ झूठे जगत में है दिन रैन खोता,
भजन में तूँ करता है लाखों बहाना।
लगायी है माया ने दुनिया नुमाइश,
कभी भूल कर ना इसे दिल लगाना॥

बिना राम के प्रेम शान्ती न होगी,
वृथा जग की माया से मन को मनाना।
जो हरदम सियाराम गाता रहेगा,
तो दोनों जहाँ का भरेगा खजाना॥

जो गाता रहेगा सिया राम रामा,
वहाँ का वो योगी यहाँ का दिवाना।
ये नर देह का स्वार्थ 'सेवक' यही है,
निरन्तर सिया राम का नाम गाना॥

॥ सत्संग ॥

कोई कर ले नशीवा वाले सत्संग दो घड़ियाँ।

(१)

चार दिनों की है जिन्दगानी, राजा रंक गये अभिमानी।
सुमिर सुमिर मुख पाले सत्संग दो घड़ियाँ॥

(२)

पाप कपट से माया जोड़े, हरि नाम से मुख क्यों मोड़े।
फिर पड़ेंगे जान दे लाले, सत्संग दो घड़ियाँ॥

(३)

सत्संग में मिल सब कोई आओ, जीवन अपना सफल बनाओ।
मिल कर हरी यश गाले, सत्संग दो घड़ियाँ॥

(४)

अली पतंग गज मीन मृग, जरत एक एक आँच।
तुलसी वे कैसे जिये जाको व्यापत पाँच॥

(५)

एक होय तो मार भगावां, पंजा नूँ कैसे समझावाँ।
पंज ने मिल के रोला पाया, किस किस को समझावाँ॥

॥ भजन ६५ ॥

मुझे वो दिल प्रभु दे दो कि जिससे प्यार तेरा हो।
जुवां वो दो जो करती हर समय इजहार तेरा हो॥
मुझे वो बक्श दे आँखें जिन्हें हो जुस्तजु तेरी।
कि जर्रे जर्रे में जिनको फक़त दीदार तेरा हो॥
मुझे संगत अगर देना तो देना परम वैष्णव की।
कि जिसको हर समय विश्वास और इतवार तेरा हो॥
मेरा साथी जमाने में बनाना उसको मन मोहन।
दया हो जिसके दिल में और सेवादार तेरा हो॥
इन आँखों से लगाता ही फिरूँ मैं चरण रज उसकी।
चमन निष्काम जो करता सदा परचार तेरा हो॥
'चमन' भी काट ले तब मस्त होकर जिन्दगी के दिन।
मेरे सिर पर कृपा का हाथ जो सरकार तेरा हो॥

॥ भजन ६६ ॥

जब तक कि भजन कीर्त्तन गाये न जायेंगे।
जो लद रहे हैं पाप मिटाये न जायेंगे॥
भगवान दया सिन्धु दया करके आइये।
कर्मों के बोझ हमसे उठाये न जायेंगे॥
संसार के सागर में पड़े डूबते बोलो।
क्या हम कभी किनारे लगाये न जायेंगे॥
पापी हूँ अधर्मी हूँ कुकर्मी हूँ तार दो।
ये आपके ऐहशान भुलाये न जायेंगे॥
तुम सर्वशक्तिमान हो करुणा निधान हो।
हम बिगड़े हैं क्या राह पै लाये न जायेंगे॥
इस दीन पर गर आपने कीन्ही दया नहीं।
दीनों के नाथ आप कहाये न जायेंगे॥
चञ्चल न यहाँ आयेंगे भगवान तब तलक।
जब तक कि भजन कीर्त्तन गाये न जायेंगे॥

॥ भजन ६७ ॥

ना रथ बैल हाथी घोड़े चलेंगे।
न संग में अशरफी के तोड़े चलेंगे॥

जिन्हें तूं समझता कि ये हैं हमारे।
वो मर्घंट तलक नाता जोड़े चलेंगे॥

न जायेंगे हमराह कोई भी तेरे।
समझ मुर्दा मुँह को सिकोड़े चलेंगे॥

चिता पर धरेंगे तुझे तेरे साथी।
और सर तेरा बांसों से फोड़े चलेंगे॥

महल मुल्क दौलत जवाहर औ नीलम।
ये सब कुछ यहीं आप छोड़े चलेंगे॥

तूँ शुभ कर्म कुछ कर ले दुनियाँ में वरना।
तेरी पीठ पर यम के कोड़े लगेंगे॥

तूँ आ होश में हो खबरदार 'चंचल'।
तेरे मग में रोड़े अटकते चलेंगे॥

॥ लकड़ी ॥

जीते लकड़ी मरते लकड़ी देख तमाशा लकड़ी का।
दुनियाँ वालो तुम्हें सुनायें ये जग सारा लकड़ी का॥

(१)

पहले इसको किसान अपने हिकमत से उपजाते हैं।
बढ़ई बनिया और महाजन बड़े काम में लाते हैं।
पड़ा हरामी के पाले तो तन पर चोटें खाते हैं।
घर व छावनी छप्पर ठट्टर इसको काट बनाते हैं॥
उड़ान—लकड़ी के गुनवां हमरो गावलो ना जलारे।
लकड़िया भइ लै साथी सारी जिन्दगनिया॥टे०॥

(२)

जिस दिन तेरा जन्म हुआ था सौर जला था लकड़ी का।
झूला झूलने के वेरी था बना पालना लकड़ी का॥
माता ने तुझको फुशलाया देकर झुनझुना लकड़ी का।
खेलन को जब घर से निकले गुल्ली डंडा लकड़ी का॥
भोरवे में उठके कैली लकड़ी कै दतुनिया।
लकड़िया भइलै साथी सारी जिन्दगनियाँ॥टे०॥

(३)

पढ़ने को स्कूल चला तो हाथ कलम था लकड़ी का।
मास्टर ने तुझको धमकाया लेकर डंडा लकड़ी का॥
ब्याहन को जब चला दुल्हा तो बना पालकी लकड़ी का।
सास ससुर के घर में देखा मंडप भी था लकड़ी का॥

बगल में बैठी थी दुल्हनियाँ बिछा के पीढ़ा लकड़ी का ।
सुमंगली का समय हुआ तो मिला सिन्धोरा लकड़ी का ॥
उड़ान—लकड़ी के डोलिया में चलेली दुल्हनियाँ ।
लकड़यिा भइलै साथी सारी जिन्दगनियाँ ॥टे०॥

(४)

हरिश्चन्द्र जी लकड़ी लेकर डोम की की थी रखवाली ।
त्रेता में श्री रामचन्द्र लकड़ी का धनुहा कर धारी ॥
द्वापर में श्री कृष्णचन्द्र लकड़ी की बंशी झनकारी ।
कलियुग में गाँधी जी ने लकड़ी का चरखा कर धारी ॥
लकड़ी की एको नाही भुलबो करनिया ।
लकड़िया भइलै साथी सारी जिन्दगनियाँ ॥टे०॥

(५)

गंगा पार हुये थे भगवान नाव वनी थी लकड़ी का ।
केवट ने जब चरण पखारा लेकर कठौता लकड़ी का ॥
कीचड़ से बचने के खातिर पहन खड़ाऊ लकड़ी का ।
मुक्ती पाने का जो माला वो भी हाथ में लकड़ी का ॥
गई जवानी आया बुढ़ापा लिया सहारा लकड़ी का ।
इस दुनियाँ से चलोगे जिस दिन अरथी बनेगी लकड़ी का ॥
शमशान पहुँचोगे जब तुम चिता वनेगी लकड़ी का ।
उड़ान—देहियाँ के पहिले जल गइलै लकड़ियाँ ।
लकड़िया भइलै साथी सारी जिन्दगनियाँ ॥

॥ भजन ६८ ॥

आपन कहीला कहनियाँ कैसे सफरी ॥टे०॥

वाराणसी भैरो बाजार में रहता हूँ मैं भाई,
मकान नम्बर के० चौवालिस बटा पाँच दर्साई।
भाई लागल बाय फिकिरिया कैसे सफरी ॥१॥

मन मेरा करता है प्यारे भजन करूँ दिन राती,
माया के फन्दे में पड़कर मन होता उत्पाती।
नाहीं लागे मोर लगनिया कैसे सफरी ॥२॥

राम कृष्ण औ महादेव के सम्मुख सिर है मेरा,
बड़े बड़े साधू सन्तों के सेवा में मन फेरा।
ऐसे रहे मोर धियनिया कैसे सफरी ॥३॥

मां काली से विनय हमारी पार करो तूँ नैया,
ज्ञान मुझे तूँ दे दो माता हरदम लगो सहइया।
धरता तेरी मैं चरनिया कैसे सफरी ॥४॥

मुक्त करो माया नकेल से बँधा हुआ मन मेरा,
कान्त के ऊपर काली दुर्गा आपन नैना फेरा।
डेरा डाला मोर जुवनिया कैसे सफरी ॥५॥

॥ वीर हनुमान ॥

वीर हनुमाना अति बलवाना राम नाम रटियो रे।
प्रभु मन बसियो रे॥

(१)
जब कोई आवे अर्ज लगावे सबकी सुनियो रे।
प्रभु मन बसियो रे॥

(२)
बजरंग वाला फेरूँ तेरी माला संकट हरियो रे।
प्रभु मन बसियो रे॥

(३)
न कोई संगी हाथ की तंगी जल्दी हरियो रे।
प्रभु मन वसियो रे॥

(४)
अरजी हमारी मरजी तुम्हारी कृपा करियो रे।
प्रभु मन वसियो रे॥

॥ प्रार्थना ॥

बजरंगबली तुम आना हमारे हरी कीर्त्तन में ॥टे०॥

(१)

कीर्त्तन में आना सिया राम जी को लाना,
युगल चरण चित्त लाना।
हमारे हरी कीर्त्तन में ॥बजरंग०॥

(२)

बैठ हृदय के सिंहासन पर राम सिया गुण गाना।
हमारे हरी कीर्त्तन में ॥बजरंग०॥

(३)

हरी कीर्त्तन में जो बाधक हो, उसको मार भगाना।
हमारे हरी कीर्त्तन में ॥बजरंग०॥

(४)

कीर्त्तन हमको खूब सिखाना, रोम रोम रम जाना।
हमारे हरी कीर्त्तन में ॥बजरंग०॥

(५)

'प्रेमनिधि' पर करुणा करके प्रभु चरणन लपटाना।
हमारे हरी कीर्त्तन में ॥बजरंग०॥

॥ विनय ॥

बजरंगी हमार सुधि लेना विनय तो से बार बार है ॥

(१)

मैं तो तेरे चरण में लोटाऊँगा, दुःख रो-रोके अपना सुनाऊँगा।
जैसे मानोगे वैसे मनाऊँगा, विनय तो से बार बार है ॥

(२)

मुझ में अवगुण अनेकों हजार हैं पर तेरी भी महिमा अपार है।
जरा कर दो तूं मेरा उद्धार है विनय तो से बार बार है ॥

(३)

जब राघव निकट तुम जाना, वहाँ मेरी भी चर्चा चलाना।
मेरी हालत प्रभु से सुनाना, विनय तो से बार बार है ॥

(४)

मेरी अर्जी प मर्जी तोहार है, शरण आया स्नेहिया लाचार है।
जरा ताको तो बेडा पार है, विनय तो से बार बार है ॥

॥ प्रार्थना ॥

गोविन्द मेरी यह प्रार्थना है, भूलूं न मैं नाम कभी तुम्हारा।
निष्काम हो के दिन रात गाऊँ, गोविन्द दामोदर माधवेती ॥
देहान्त काले तुम सामने हो, बंशी बजाते मन को लुभाते।
गाता यही मैं तन नाथ त्यागूं, गोविन्द दामोदर माधवेती ॥

॥ चेतावनी ॥

प्यारे ! जरा तो मन में विचारो,
क्या साथ लाये अरु ले चलोगे।
जावे यही साथ सदा पुकारो,
गोविन्द दामोदर माधवेती ॥१॥

नारी धरा धाम सुपुत्र प्यारे,
सन्मित्र सद्‌वान्धव द्रव्य सारे।
कोई न साथी, हरि को पुकारो,
गोविन्द्र दामोदर माधवेती ॥२॥

नाता भला क्या जग से हमारा,
आये यहाँ क्यों कर क्या रहे हैं।
सोचो विचारो हरि को पुकारो,
गोविन्द दामोदर माधवेती ॥३॥

सच्चे सखा हैं हरि ही हमारे,
माता पिता 'शील' सुवन्धु प्यारे।
भूलो न भाई दिन रात गावो,
गोविन्द दामोदर माधवेती ॥४॥

॥ आरती माँ दुर्गा जी की ॥

जै अम्बे गौरी मैया जै मंगल मूर्त्ती मैया जै आनन्द करणी ।
तुमको निशि दिन ध्यावत, मैया जी को सब दिन ध्यावत
हरी ब्रह्मा शिवरी ॥जै०॥
मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को, मैया टीको मृगमद को ।
उज्ज्वल से दोऊ नैना निर्मल से दोऊ नैना चन्द्र वदन नीको ॥जै०॥
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे हो मैया रक्ताम्बर राजे ।
रक्त पुष्प वन माला रक्त पुष्प वन माला कंठन पर साजै ॥जै०॥
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी, मैया खड्ग खप्पर धारी ।
सुरनर मुनिजन सेवत सुरनर मुनिजन सेवत तिनके दुःख हारी ॥जै०॥
कानन कुण्डल शोभित ना साग्रे मोती, मैया ना साग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत समज्योति ॥जै०॥
शुंभ निशुंभ विदारे महिषासुर घाती, मैया महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती ॥जै०॥
चौसठ योगिनि मंगल गावत नृत्य करत भैरो मैया नृत्य करत भैरो ।
बाजत ताल मृदंगा बाजत ढोल मृदंगा और बाजत डमरू ॥जै०॥
भुजा चार अति शोभित खड्ग खप्पर धारी मैया खड्ग खप्पर धारी ।
मन वांछित फल पावत जो चाहत सो पावत सेवत नरनारी ॥जै०॥
कञ्चन थाल विराजत अगर कपूर वाती हो मैया अगर कपूर वाती ।
श्री माल केतु में राजत माल केतु में राजत कोटि रतन ज्योति ॥जै०॥
या अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावे हो मैया जो मन से गावे
हो मैया जो सुन्दर गावे ।
भनत दिवानन्द स्वामी कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पावे ॥जै०॥